तैत्तिरीयोपनिषत्

contains subjects as

Sheeksha valli
Aananda valli
Bhirgu valli
Mahanarayanopanishad
Aruna Prasnam (Surya Namakaram)
&
Tri Naachiketam

Contents

| 1 र्श | क्षा वल्ली | 11 |
|--------|--|-----|
| 1.1 | पूर्वशान्ति पाठः | .11 |
| 1.2 | शिक्षाशास्त्रार्थ सङ्ग्रह: | .11 |
| 1.3 | संहितोपासनं | 12 |
| 1.4 | मेघादि-सिद्ध्यर्था आवहन्ती होम मन्त्राः | 13 |
| 1.5 | व्याहृत्युपासनं | 14 |
| 1.6 | मनोमयत्वादि-गुणक-ब्रह्मोपासनया स्वाराज्य-सिद्धिः | 16 |
| 1.7 | पृथिव्या द्युपाधिक-पञ्च-ब्रह्मोपासनं | 16 |
| 1.8 | प्रणवोपासनम् | 17 |
| 1.9 | स्वाध्याय-प्रशंसा | 18 |
| 1.10 | ब्रह्मज्ञान-प्रकाशक-मन्त्रः | 18 |
| 1.11 | शिष्यानुशासनम् | 19 |
| 2 ब्रह | ग्रानन्द वल्ली | 22 |
| 2.1 | उपनिषत्सार सङ्ग्रहः | 22 |
| 2.2 | पञ्चकोश-विवरणं | 23 |
| 2.3 | अभयप्रतिष्ठा | 26 |
| 2.4 | ब्रह्मानन्दमीमांसा | 27 |
| 3 भृ | गु वल्ली | 31 |
| 3.1 | ब्रह्मजिज्ञासा | 31 |

| 3.2 | पञ्चकोशान्तः स्थित-ब्रह्मनिरूपणम् | 31 |
|------|--|----|
| 3.3 | अन्नब्रह्मोपासनम् | 34 |
| 3.4 | सदाचारप्रदर्.शनम् । ब्रह्मानन्दानुभवः | 35 |
| 4 मह | हा नारायणोपनिषत् | 39 |
| 4.1 | अम्भस्यपारे | 39 |
| 4.2 | गायत्री मन्त्राः | 45 |
| 4.3 | दूर्वा सूक्तं | 47 |
| 4.4 | मृत्तिका सूक्तं | 47 |
| 4.5 | शत्रुजय मन्त्राः | 48 |
| 4.6 | अघमर्षण सूक्तं | 50 |
| 4.7 | दुर्गा सूक्तं | 53 |
| 4.8 | व्याहृति होम मन्त्राः | 54 |
| 4.9 | ज्ञानप्राप्त्यर्था होममन्त्राः | 55 |
| 4.10 | वेदाविस्मरणाय जपमन्त्राः | 56 |
| 4.11 | तपः प्रशंसा | 56 |
| 4.12 | विहिताचरण प्रशंसा निषिद्धाचरण निन्दा च | 56 |
| 4.13 | दहर विद्या | 57 |
| 4.14 | नारायण सूक्तं | 59 |
| 4.15 | आदित्य मण्डले परब्रह्मोपासनं | 61 |
| 4.16 | आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्व प्रदर्शनं | 62 |

| 4.17 शिवोपासन मन्त्राः |
|--|
| 4.18 पश्चिमवक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः |
| 4.19 उत्तर वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः63 |
| 4.20 दक्षिण वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः64 |
| 4.21 प्राग्वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः64 |
| 4.22 ऊर्ध्व वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः64 |
| 4.23 नमस्कारार्त्थ मन्त्राः64 |
| 4.24 अग्निहोत्र हवण्याः उपयुक्तस्य वृक्ष विशेष-स्याभिधानम्65 |
| 4.25 रक्षोघ्न मन्त्र निरूपणं65 |
| 4.26 भूदेवताक मन्त्रः |
| 4.27 सर्वा देवता आपः66 |
| 4.28 सन्ध्यावन्दन मन्त्राः67 |
| 4.29 प्रणवस्य ऋष्यादि विवरणं68 |
| 4.30 गायत्र्यावाहन मन्त्राः68 |
| 4.31 गायत्री उपस्थान मन्त्राः69 |
| 4.32 आदित्यदेवता मन्त्रः70 |
| 4.33 त्रिसुपर्णमन्त्राः70 |
| 4.34 मेधा सूक्तं |
| 4.35 मृत्युनिवारण मन्त्राः73 |
| 4.36 प्रजापति-प्रार्त्थना मन्त्रः75 |
| 4.37 इन्द्रप्रार्थना मन्त्रः |

| | 4.38 मृत्युञ्जय मन्त्राः | . 75 |
|---|---|------|
| | 4.39 पापनिवारका मन्त्राः | . 75 |
| | 4.40 वसु – प्रार्थना मन्त्रः | .76 |
| | 4.41 कामोऽकार्षीत् – मन्युरकार्षीत् मन्त्रः | .76 |
| | 4.42 विरजा होम मन्त्राः | .77 |
| | 4.43 वैश्वदेव मन्त्राः | .80 |
| | 4.44 प्राणाहुति मन्त्राः | .82 |
| | 4.45 भुक्तान्नाभिमन्त्रण मन्त्राः | .83 |
| | 4.46 भोजनान्ते आत्मानुसन्धान मन्त्राः | .84 |
| | 4.47 अवयवस्वस्थता प्रार्त्थना मन्त्रः | .84 |
| | 4.48 इन्द्र सप्तर्षि संवाद मन्त्रः | .84 |
| | 4.49 हृदयालंभन मन्त्रः | .84 |
| | 4.50 देवता प्राणनिरूपण मन्त्रः | .84 |
| | 4.51 अग्नि स्तुति मन्त्रः | .85 |
| | 4.52 अभीष्ट याचना मन्त्रः | .85 |
| | 4.53 पर तत्त्व निरूपणं | .85 |
| | 4.54 ज्ञान साधन निरूपणं | .87 |
| | 4.55 ज्ञानयज्ञः | . 91 |
| 5 | अरुणप्रवनः–तैत्तिरीयारण्यकं | 95 |
| | 1.1.1 अनुवाकं-1 | 95 |
| | 1.1.2 अनुवाकं-2 | 96 |

| 1.1.3 अनु | वाकं–3 | 98 |
|-----------|-------------|-----|
| 1.1.4 अनु | वाकं-4 | 100 |
| 1.1.5 अनु | वाकं-5 | 101 |
| 1.1.6 अनु | वाकं–6 | 102 |
| 1.1.7 अनु | वाकं-7 | 103 |
| 1.1.8 अनु | वाकं–8 | 105 |
| 1.1.9 अनु | वाकं-9 | 108 |
| 1.1.10 3 | मनुवाकं-10 | 111 |
| 1.1.11 3 | मनुवाकं-11 | 113 |
| 1.1.12 3 | मनुवाकं−12 | 116 |
| 1.1.13 ঔ | मनुवाकं-13 | 118 |
| 1.1.14 ঔ | मनुवाकं –14 | 119 |
| 1.1.15 ঔ | मनुवाकं-15 | 122 |
| 1.1.16 ঔ | मनुवाकं –16 | 122 |
| 1.1.17 3 | मनुवाकं-17 | 123 |
| 1.1.18 3 | मनुवाकं−18 | 125 |
| 1.1.19 ঔ | मनुवाकं-19 | 126 |
| 1.1.20 ঔ | मनुवाकं-20 | 126 |
| 1.1.21 3 | मनुवाकं –21 | 127 |
| 1.1.22 3 | मनुवाकं-22 | 128 |
| 1.1.23 ঔ | मनुवाकं-23 | 133 |
| 1.1.24 ঔ | मनुवाकं-24 | 136 |
| 1.1.25 अ | भनुवाकं –25 | 138 |

| | _ | | |
|---|--------|------------|-----|
| 6 | त्रिणा | चेकेतं | 151 |
| | 1.1.32 | अनुवाकं-32 | 148 |
| | 1.1.31 | अनुवाकं-31 | 146 |
| | 1.1.30 | अनुवाकं-30 | 145 |
| | 1.1.29 | अनुवाकं-29 | 145 |
| | 1.1.28 | अनुवाकं-28 | 144 |
| | 1.1.27 | अनुवाकं-27 | 142 |
| | 1.1.26 | अनुवाकं-26 | 139 |

Notes: This Book has been brought to you with the courtesy of some Veda learners who have collaborated to prepare this book.

Please give your feedback, comments and report errors to the e-mail id vedavms@gmail.com. We shall strive to make this book more accurate and error-free.

You may note that there are inherent "paata bedhas" when we compare various sources and books. We have made constant reference to the Taittiriya Sakhaa compiled and commented by Shri. Sayanacharya of 13th Century and Shri Bhatta Bhaskaracharya (period unknown). Their manuscript compilations were later converted into books by great Scholars. One of such sets of "Taittiriya" was printed and published during early 1900 A.D. at Govt. Branch Press, Mysore and another set later published under "Anandaashram Series". These Books were referred to by us as our primary source material for this Book.

This book has not been prepared with any commercial purpose and is purely for studies.

Conventions used in Letters:

```
✓ - is represented by (g)
৺ is represented by (gg)
৺ is represented by (gm)
৺ is represented as anunaasikam
```

1st Version Notes: Version 3.2 dated 30th September 2019.

In this Version,

- 1. Source reference of Mantras have been provided
- 2. Conventions usage has been more standardised
- 3. Corrections found and reported till 28th February 2019 incorporated.

2nd and Current Version Number 3.2 dated 31st March 2020

- 1. This Version replaces earlier version "3.2" dated 30th September 2019.
- 2. We have marked '||" (double ruk) at the end of vedic statements based on the book released under "Anandashram Series on Taittirlya Brahmanam containing bashya of Scholar Sayanacharya.
- 3. We have standardised some of the conventions and formatted this compilation to make reading easier.
- 4. We have included the mantra references for all dasinis & included Korvai at end of each Anuvaka and Consolidated Korvai at the end of each Prapatakam. TriNaachketa Mantras are starting in somewhere middle of Taittiriya Bharaman, Chapter 11. We have numbered the first Dasin number as "37" to match with the numberings appearing in conventional texts.
- 5. In this Book We have highlighted the "unexpanded version of mantras" in yellow for Aruna Prasnam. In Upanishads when have given expansion above the "unexpanded mantra". Details are given below for ready reference.

For expansions in "Aruna Prasnam" -- only unexpanded mantras are highlighted in yellow.

For Expansion

See "TA 1- 4 Sanskrit",

Shown as appendix in page No.69

For expansions in "upanishad" ---- unexpanded mantras are highlighted in yellow. Expanded Mantras are also given above the unexpanded Mantras inside a box.

We have/shall include Paata Bhedams in brackets wherever found applicable to the best of our efforts.

In Taittriya Aranyakam (TA) the order of arranging chapters vary from one Scholar to the other. We have arranged the TA chapteres as per the order given by the book published by Nrushima priya Trust, Chennai. Please refer to page 10a & 10b of this book to have an idea as to how TA Chapteres are represented by various Scholars.

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

1 शक्षा वल्ली

1.1 पूर्वशान्ति पाठः

```
T.A.5.1.1
रान्नो मित्रः रां वरुणः । रान्नो भवत्वर्यमा । रान्न इन्द्रो बृहस्पतिः ।
शक्ती विष्णु – रुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो ।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ।
म्रतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि ( ) । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु ।
। । ॥
अवतु मां । अवतु वक्तारं ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ 1.1
(सत्त्यम् वदिष्यामि पञ्च च) (A1)
     1.2 शिक्षाशास्त्रार्थ सङ्ग्रहः
शीक्षां व्याख्यास्यामः । वर्णः स्वरः । मात्रा बलं । साम सन्तानः ।
॥
इत्युक्तः शीक्षाद्ध्यायः ॥ 2.1
(ज्ञीक्षाम् पञ्च) (A2)
```

<u>1.3</u> संहितोपासनं

```
T.A.5.3.1
सह नौ यशः । सह नौ ब्रह्मवर्चसं ॥
ा
अथातः सर्वहिताया उपनिषदं ँव्याख्यास्यामः । पञ्चस्वधि–करणेषु ।
अधिलोकमधि-ज्यौतिष-मधिविद्य-मधिप्रज-मद्ध्यात्मं ।
ता महास्र ्हिता इत्याचक्षते ॥
अथाधि लोकं । पृथिवी पूर्वरूपं । द्यौरुत्तररूपं ।
आकाशः सन्धिः । 3.1
T.A.5.3.2
वायुः सन्धानं । इत्यधि लोकं ॥
।
अथाधि ज्यौतिषं । अग्निः पूर्व रूपं । आदित्य उत्तररूपं ।
आपः सन्धिः । वैद्युतः सन्धानं । इत्यधि ज्यौतिषं ॥
अथाधि विद्यं । आचार्यः पूर्व रूपं । 3.2
T.A.5.3.3
अन्तेवास्युत्तररूपं । विद्या सन्धिः ।
प्रवचन 🗸 सन्धानं । इत्यधि विद्यं ॥
अथाधिप्रजं । माता पूर्वरूपं । पितोत्तररूपं । प्रजा सन्धिः ।
प्रजनन 💇 सन्धानं । इत्यधिप्रजं ॥ 3.3
```

```
T.A.5.3.4
अथाद्ध्यात्मं । अधराहनुः पूर्व रूपं । उत्तराहनु – रुत्तररूपं ।
वाख् सन्धिः । जिह्वां सन्धानं । इत्यद्ध्यात्मं ॥
इती मामहा स्ट्हिताः॥
य एवमेता महास्र ्हिता व्याख्याता वेद।
सन्धीयते प्रजया पशुभिः।
ब्रह्मवर्च-सेनान्नाद्येन सुवर्ग्येण (सुवर्गेण) लोकेन () ॥ 3.4
(सन्धि – राचार्यः पूर्वरूप – मित्यधिप्रजम् – ँलोकेन) (A3)
     <u>1.4</u> मेघादि-सिद्ध्यर्था आवहन्ती होम मन्त्राः
T.A.5.4.1
य रुछन्दसा-मृषभो विश्वरूपः । छन्दोभ्यो-ऽद्ध्यमृताथ् संबभूव ।
स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु । अमृतस्य देव धारणो भूयासं ॥
श्रीरं मे विचर्.षणं । जिह्वा मे मधुमत्तमा । कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवं ।
ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया ऽपिहितः । श्रुतं मे गोपाय ॥
आवहन्ती वितन्वाना । 4.1
T.A.5.4.2
—— । । । । । व्यक्ति मम गावश्च ।
कुर्वाणा चीर–मात्मनः । वासा्र्सि मम गावश्च ।
अन्नपाने च सर्वदा । ततो मे श्रिय-मावह ।
```

```
लोमशां पश्मिः सह स्वाहा ॥ आमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा ।
विमाऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा । प्रमाऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा ।
दमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा ।
शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा ॥ ४.२
T.A.5.4.3
तं त्वा भग प्रविशानि स्वाहा । स मा भग प्रविश स्वाहा ।
तस्मिनथ् सहस्र शाखे । निभगाहं त्विय मृजे स्वाहा ॥
यथाऽऽपः प्रवताऽऽयन्ति । यथा मासा अहर्जरं ।
एवं मां ब्रह्मचारिणः । धातरायन्तु सर्वतः स्वाहा ()॥
प्रतिवेशोऽसि प्र मा भाहि प्र मा पद्यस्व ॥ 4.3
(वितन्वाना – श्रमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा–धातरायन्तु सर्वतः
स्वाहैकम् च) (A4)
    1.5 व्याहृत्यपासनं
T.A.5.5.1
भू-र्भुव-स्सुव-रिति वा एता स्तिस्रो व्याहृतयः ॥
तासामुहस्मै तां चतुर्त्थीं । माहाचमस्यः प्रवेदयते ।
मह इति ॥ तद् ब्रह्म । स आत्मा । अङ्गान्यन्या देवताः ॥
```

```
भूरिति वा अयं लोकः । भुव इत्यन्तरिक्षं ।
सुव-रित्यसौ लोकः। 5.1
T.A.5.5.2
मह इत्यादित्यः । आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते ॥
भूरिति वा अग्निः । भुव इति वायुः । सुवरित्यादित्यः ।
मह इति चन्द्रमाः । चन्द्रमसा वाव सर्वाणि ज्योती ्षि महीयन्ते ॥
भ्-रिति वा ऋचः । भुव इति सामानि ।
स्व रिति यजू ُषि। 5.2
T.A.5.5.3
मह इति ब्रह्म । ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते ॥
अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते ॥ ता वा एता-श्वतस्र श्वतुद्र्धा ।
। — । । । । । । । । चतस्र—श्चतस्रो व्याहृतयः । ता यो वेद ( ) । स वेद् ब्रह्म ।
सर्वेऽस्मै देवा बलिमावहन्ति ॥ 5.3
(असौ लोको - यजूर्षि - वेद हे च) (A5)
```

```
<u>1.6</u> मनोमयत्वादि-गुणक-ब्रह्मोपासनया स्वाराज्य-सिद्धिः
T.A.5.6.1
स य एषोऽन्तर्. – हृदय आकाशः । तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः ।
अमृतो हिरण्मयः ॥ अन्तरेण तालुके । य एष स्तन इवावलंबते ।
सेन्द्र योनिः । यत्रासौ केशान्तो विवर्तते । व्यपोह्य शीर्.षकपाले ॥
भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति । भुव इति वायौ । 6.1
T.A.5.6.2
सुवरित्यादित्ये । मह इति ब्रह्मणि । आप्नोति स्वाराज्यं ।
आप्नोति मनसस्पतिं । वाक्पति श्रक्षुष्पतिः । श्रोत्रपति र्विज्ञानपतिः ।
एतत् ततो भवति । आकाश शरीरं ब्रह्म ।
- । । । ।
सत्यात्म प्राणारामं मन आनन्दं । शान्ति समृद्ध-मृगृतं ( ) ॥
इति प्राचीन योग्योपास्व ॥ 6.2
(वाया-वमृत मेकम् च) (A6)
    <u>1.7 पृथिव्या द्युपाधिक-पञ्च-ब्रह्मोपासनं</u>
पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्-दिशोऽवान्तरदिशाः ।
-- ।
अग्निर्-वायु-रादित्य-श्चन्द्रमा नक्षत्राणि ।
। ।
आप ओषधयो वनस्पतय आकाश आत्मा । इत्यधिभूतं ॥
```

```
अथाद्ध्यात्मं । प्राणो व्यानोऽपान उदानः संमानः ।
चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् त्वक् । चर्म माण् स स्नावास्थि मज्जा ॥
एत दिधिविधायर्.षि खोचत् । पाङ्कं वा इद्ध् सर्वं ( ) ।
पाङ्कं नैव पाङ्क 🔄 स्पृणोतीति ॥ 7.1
(सर्वमेकम् च) (४७)
    <u>1.8</u> प्रणवोपासनम्
T.A.5.8.1
ओ-मिति ब्रह्म ॥ ओ-मितीद्र सर्वं ॥
ओमित्येत-दनुकृति हस्म वा अप्यो श्रावयेत्या-श्रावयन्ति ।
ओ-मिति सामानि गायन्ति । ओ ् शोमिति शस्त्राणि श ्सन्ति ।
ओ-मित्यद्ध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति । ओ-मिति ब्रह्मा प्रसौति ।
ओ-मित्यग्निहोत्र-मनुजानाति ।
ा । । । । । । अो-मिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नवानीति ।
ब्रह्मैवो-पाप्नोति ॥ ८.1
(ओम् दशं) (४८)
```

1.9 स्वाध्याय-प्रशंसा

```
T.A.5.9.1
ऋतं च स्वाद्ध्याय प्रवचने च । सत्यं च स्वाद्ध्याय प्रवचने च ।
तपश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च । दमश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च ।
रामश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च । अग्नयश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च ।
अग्निहोत्रं च स्वाद्ध्याय प्रवचने च।
अतिथयश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च।
मानुषं च स्वाद्ध्याय प्रवचने च।
प्रजा च स्वाद्ध्याय प्रवचने च ()।
प्रजनश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च । प्रजातिश्च स्वाद्ध्याय प्रवचने च ॥
सत्यमिति सत्यवचां राथी तरः । तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः ।
स्वादध्याय प्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः ।
तब्धि तपस्तब्धि तपः ॥ 9.1
(प्रजा च स्वाद्ध्यायप्रवचने च षट्च) (A9)
    <u> 1.10   ब्रह्मज्ञान–प्रकाशक–मन्त्रः</u>
T.A.5.10.1
अहं वृक्षस्य रेरिवा । कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव ।
ऊद्रध्वं पवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि ।
```

```
द्रविण ए सवर्चसं।
सुमेधा अमृतोक्षितः । इति त्रिशङ्कोर्-वेदानुवचनं ॥ 10.1
(अह ए षट्) (A10)
    <u>1.11 शिष्यानुशासनम्</u>
वेदमनूच्या- ऽचार्योन्तेवासिन-मनुशास्ति ॥
सत्यं वद । धर्मं चर ॥ स्वाद्ध्यायान्मा प्रमदः ।
आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेथ्सीः।
सत्यान्न प्रमदितव्यं । धर्मान्न प्रमदितव्यं ।
कुशलान्न प्रमदितव्यं । भूत्यै न प्रमदितव्यं ।
स्वाद्ध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यं । 11.1
देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यं ॥
मातृदेवो भव । पितृदेवो भव ।
आचार्य देवो भव । अतिथिदेवो भव ॥
यान्यनवद्यानि कर्माणि । तानि सेवितव्यानि । नो इतराणि ॥
यान्यस्माक एं सुचरितानि । तानि त्वयोपास्यानि । 11.2
```

T.A.5.11.3 नो इतराणि ॥ ये के चास्म-च्छेया ्सो ब्राह्मणाः । तेषां त्वयाऽऽसने न प्रश्वंसितव्यं ॥ श्रद्धया देयं । अश्रद्धयाऽदेयं । श्रिया देयं । हिया देयं । भिया देयं । सम्विंदा देयं ॥ अथ यदि ते कर्मविचिकिथ्सा वा वृत्त विचिकिथ्सा वा स्यात् । 11.3 T.A.5.11.4 ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्.शिनः । युक्ता आयुक्ताः । अलूक्षा धर्मकामाः स्युः । यथा ते तत्र वर्तेरन्न् । तथा तत्र वर्तेथाः ॥ अथाभ्याख्यातेषु । ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्.शिनः । युक्ता आयुक्ताः । अलूक्षा धर्म कामाः स्युः । यथा ते तेषु वर्तेरत्र् () । 11.4a T.A.5.11.5 तथा तेषु वर्तेथाः ॥ एषं आदेशः । एष उपदेशः । एषा वेदोपनिषत् । एतदनुशासनं । एव मुपासितव्यं । एव मुचैतदुपास्यं ॥ 11.46 (स्वाद्ध्यायप्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम् – तानित्वयोपास्यानि – स्यात् – तेषु वर्तेरन्थ् – +सप्त च) (४११) T.A.5.12.1 रान्नो मित्रः रां वरुणः । रान्नो भवत्वर्यमा । रान्न इन्द्रो बृहस्पतिः । शतो विष्णु रुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो ।

तैत्तिरीय आरण्यकं- शिक्षा वल्ली - (TA 5)

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मा वादिषं । ऋतमवादिषं । सत्यमवादिषं () । तन्मामावीत् । तह्यक्तारमावीत् । आवीन्मां । सत्यमवादिषं () । तन्मामावीत् । तह्यकारमावीत् । आवीन्मां । आवीद्यकारं ॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ 12.1 (सत्यमवादिषम् पञ्च च) (A12)
॥ इति शिक्षावल्ली समाप्ता ॥

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः

श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

2 ब्रह्मानन्द वल्ली

```
T.A.5.13.1
सह ना ववतु । सह नौ भुनकु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
(सह पञ्च) (A13)
    <u>2.1</u> उपनिषत्सार सङ्ग्रहः
T.A.5.14.1
ब्रह्मविदाप्नोति परं॥
तदेषाऽभ्युक्ता । सत्यं ज्ञान-मनन्तं ब्रह्म ।
यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्न्।
॥ — ॥ — ।
सोऽञ्नुते सर्वान् कामान्थ् सह । ब्रह्मणा विपश्चितेति ॥
तस्माद्वा एतस्मादात्मनं आकाशः संभूतः । आकाशाद् वायुः ।
वायोरग्निः । अग्नेरापः । अद्भ्यः पृथिवी । पृथिव्या ओषधयः ।
ा
ओषधीभ्योऽन्नं । अन्नात् पुरुषः ॥
स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः ॥ तस्येदमेव शिरः ।
```

अयं दक्षिणः पक्षः । अयमुत्तरः पक्षः । अयमात्मा । । - । इदं पुच्छं प्रतिष्ठा ॥ तदप्येष २लोको भवति ॥ 1.1

2.2 पञ्चकोश-विवरणं

T.A.5.14.2 अन्नाद्दै प्रजाः प्रजायन्ते । याः काश्च पृथिवी ७ श्रिताः । अथो अन्नेनैव जीवन्ति । अथैनदपियन्त्यन्ततः । अन्न ए हि भूतानां ज्येष्ठं । तस्माथ् सर्वीषध मुच्यते । सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति । येऽन्नं ब्रह्मोपासते । अन्न एं हि भूतानां ज्येष्ठं । तस्माथ् सर्वीषध मुच्यते । अन्नाद् भूतानि जायन्ते । जातान्यन्नेन वर्द्धन्ते । अद्यतेऽति च भूतानि । तस्मादन्नं तदुच्यत इति ॥ तस्माद्वा एतस्मा-दन्नरसमयात् । अन्योऽन्तर आत्मा प्राण मयः । तेनैष पूर्णः ॥ स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुष विधतां । अन्वयं पुरुष विधः । तस्य प्राण एव शिरः ॥ व्यानो दक्षिणः पक्षः । अपान उत्तरः पक्षः । आकाश आत्मा । पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा ॥ तदप्येष २लोको भवति ॥ 2.1

T.A.5.14.3 प्राणं देवा अनुप्राणन्ति । मनुष्याः पशवश्च ये । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्माथ् सर्वायुष मुच्यते । सर्वमेव त आयुर्यन्ति । ये प्राणं ब्रह्मोपासते । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्माथ् सर्वायुष-मुच्यंत इति ॥ तस्यैष एव जारीर आत्मा । यः पूर्वस्य ॥ तस्माद्वा एतस्मात् प्राणमयात् । अन्योऽन्तर आत्मा मनोमयः । तेनैष पूर्णः ॥ स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुषविधतां । अन्वयं पुरुषविधः । तस्य यजुरेव शिरः । ऋग् दक्षिणः पक्षः । सामोत्तरः पक्षः । आदेश आत्मा । अथर्वाङ्गिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा ॥ तदप्येष इलोंको भवति ॥ 3.1 T.A.5.14.4 ——— । ॥ । । । । यतो वाचो निवर्तन्ते । अप्राप्य मनसा सह । आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् । न बिभेति कदांचनेति ॥ तस्यैष एव ज्ञारीर आत्मा । यः पूर्वस्य ॥ तस्माद्वा एतस्मान् मनोमयात् । अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः । तेनैष पूर्णः ॥ स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुष विधतां । अन्वयं पुरुष विधः । तस्य श्रब्धैव शिरः । ऋतं दक्षिणः पक्षः ।

सत्यमुत्तरः पक्षः । योग आत्मा । महः पुच्छं प्रतिष्ठा ॥ तदप्येष २लोको भवति ॥ 4.1 T.A.5.14.5 विज्ञानं यज्ञं तनुते । कर्माणि तनुतेऽपि च । विज्ञानं देवाः सर्वे । ब्रह्म ज्येष्ठ-मुपासते । विज्ञानं ब्रह्म चेद् वेद । तस्माच्येन्न प्रमाद्यति । शरीरे पाप्मनो हित्वा । सर्वान्-कामान्थ्-समञ्नुत इति ॥ तस्यैष एव जारीर आत्मा । यः पूर्वस्य ॥ तस्माद्वा एतस्माद्-विज्ञानमयात् । अन्योऽन्तर आत्माऽऽनन्दमयः । तेनैष पूर्णः ॥ स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुषविधतां । अन्वयं पुरुषविधः । तस्य प्रिय-मेव शिरः । मोदो दक्षिणः पक्षः । प्रमोद उत्तरः पक्षः । आनन्द आत्मा । ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा ॥ तदप्येष इलोंको भवति ॥ 5.1 T.A.5.14.6 असन्नेव सं भवति । असद् ब्रह्मेति वेद चेत् । अस्ति ब्रह्मेति चेद् वेद । सन्तमेनं ततो विदुरिति ॥ तस्यैष एव ज्ञारीर आत्मा । यः पूर्वस्य ॥ अथातोऽनु प्रञ्नाः ॥ उता विद्या नमुं लोकं प्रेत्य । कश्चन गच्छती(3) । आहों विद्वानमुं ँलोकं प्रेत्यं।

कश्चित् समैश्नुता(3) उ ॥ सोऽकामयत ।
बहुस्यां प्रजायेयेति । स तपोऽतप्यत । स तपस्तप्त्वा ।
इद्ध् सर्व-मसृजत ॥ यदिदं किञ्च । तथ्सृष्ट्वा । तदेवानु प्राविशत् ॥
तदनुप्रविश्य । सच्च त्यच्चाभवत् । निरुक्तं चा निरुक्तं च ।
निलयनं चा निलयनं च । विज्ञानं चा विज्ञानं च ।
सत्यं चानृतं च सत्य-मभवत् ॥ यदिदं किञ्च ।
तथ्सत्य-मित्या चक्षते ॥ तदप्येष श्लोको भवति ॥ 6.1

2.3 अभयप्रतिष्ठा

प्रसिद्धाः इदमग्र आसीत् । ततो वै सदजायत ।

तदात्मान स्वय – मकुरुत । तस्मात् तथ् सुकृतमुच्यत इति ॥

यद्वै तथ् सुकृतं । रसो वै सः ।

रस्म होवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भविति ॥

को होवान्यात् कः प्राण्यात् । यदेष आकाश आनन्दो न स्यात् ।

एष होवानन्दयाति ॥

यदा होवैष एतस्मिन् – नदृश्ये ऽनात्म्ये ऽनिरुक्ते ऽनिलयने ऽभयं

— ।

प्रतिष्ठां विन्दते ।

अथ सोऽभयं गतो भवति ॥

यदा होवैष एतस्मिन्-नुदर-मन्तरं कुरुते । अथ तस्य भयं भवति ॥

तत्त्वेव भयं विदुषो-ऽमन्वानस्य ॥ तदप्येष इलोको भवति ॥ ७.1

<u> 2.4</u> ब्रह्मानन्दमीमांसा

T.A.5.14.8 भीषाऽस्मा-द्वातः पवते । भीषोदेति सूर्यः । भीषाऽस्मा-दग्नि-श्चेन्द्रश्च । मृत्युर् धावति पञ्चम इति ॥ सैषाऽऽनन्दस्य मीमां स्ता भवति ॥ युवा स्याथ् साधु युवाऽद्ध्यायकः । आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः । तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् । स एको मानुष आनन्दः ॥ ते ये शतं मानुषा आनन्दाः । ८.१ स एको मनुष्य-गन्धर्वाणा-मानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं मनुष्य-गन्धर्वाणा-मानन्दाः । स एको देव-गन्धर्वाणा-मानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं देव-गन्धर्वाणा-मानन्दाः । स एकः पितृणां चिरलोक-लोकाना-मानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥

```
ते ये शतं पितृणां चिरलोक-लोकाना-मानन्दाः ।
स एक आजानजानां देवाना-मानन्दः । 8.2
श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥
ते ये शत-माजान-जानां देवानां मानन्दाः।
स एकः कर्म-देवानां देवानां-मानन्दः।
ये कर्मणा देवानिप यन्ति । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥
ते ये शतं कर्मदेवानां देवानां-मानन्दाः । स एको देवानां-मानन्दः ।
श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं देवाना-मानन्दाः ।
स एक इन्द्रस्यानन्दः । 8.3
श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतमिन्द्र–स्याऽऽनन्दाः ।
स एको बृहस्पते-रानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥
ते ये शतं बृहस्पते रानन्दाः । स एकः प्रजापते-रानन्दः ।
श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ते ये शतं प्रजापते-रानन्दाः ।
स एको ब्रह्मण आनन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ 8.4
```

```
स यश्चायं पुरुषे । यश्चासा-वादित्ये । स एकः ॥ स य एवं वित् ।
अस्माल्लोकात् प्रेत्य । एतमन्नमय-मात्मान-मुपंसङ्क्रामति ।
एतं प्राणमय-मात्मान-मुपसङ्क्रामति ।
एतं मनोमय-मात्मान-मुपसङ्क्रामति ।
एतं वैज्ञानमय-मात्मान-मुपसङ्क्रामति ।
एतमानन्दमय-मात्मान-मुपसङ्क्रामति ॥
तदप्येष इलोको भवति ॥ 8.5
T.A.5.14.9
——— । ॥ । । । । यतो वाचो निवर्तन्ते । अप्राप्य मनसा सह । आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् ।
न बिभेति कुतश्चनेति ॥ एत ए ह वा व न तपति ।
किमहर् साधु नाकरवं । किमहं पाप-मकरव-मिति ॥
स य एवं विद्वानेते आत्मान स्पृणुते ॥
उभे होवैष एते आत्मान स्पृणुते।
य एवं वैद ॥ इत्युपनिषत् ॥ 9.1
सह ना ववतु । सह नौ भुनकु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
```

```
Special Korvai
(ब्रह्मविदिदमयमिदमेकविङ्शतिः ।
अन्ना दन्नरसमयात् प्राणो व्यानोऽपान आकां ३१: पृथिवी पुच्छ 🗸
षड्विण्शतिः।
प्राणम् प्राणमयान् मनो यजुर्. ऋख् सामादेशोऽथविङ्गिरसः पुच्छम्
द्वावि एंशतिः।
यतः श्रन्धर्त ए सत्यम् योगो महोऽष्टादशः।
विज्ञानम् प्रियम् मोदः प्रमोद आनन्दो ब्रह्म पुच्छम् द्वावि एशितः।
असन्नेवाथाष्टावि ज्ञातिः। असथ् षोडग्।
भीषाऽस्मान् मानुषो मनुष्यगन्धर्वाणाम् देवगन्धर्वाणाम्
पितृणाम्चिरलोकलोकाना माजानजानाम् कर्मदेवानाम् "ये कर्मणा देवाना
मिन्द्रस्य बृहस्पतेः प्रजापतेर् ब्रह्मणः स यश्च संक्रामत्येकपञ्चाशत् ।
यतः कृतश्च नैतमेकादश नव) (A14)
                   ॥ इति ब्रह्मानन्दवल्ली समाप्ता ॥
```

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

3 भुगु वल्ली

3.1 ब्रह्मजिज्ञासा

मृगुर्वे वारुणिः । वरुणं पितर्-मुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मोति ॥
तस्मा एतत् प्रोवाच । अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति ॥
त्रं होवाच । यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते ।
येन जातानि जीवन्ति । यत् प्रयन्त्यभि सम्विंशन्ति ।
तद् विजिज्ञासस्व । तद् ब्रह्मोति ॥
स तपोऽतप्यत । स तप –स्तप्त्वा ॥ 1.1

3.2 पञ्चकोशान्तः स्थित-ब्रह्मनिरूपणम्

T.A.5.15.1

```
तद् विज्ञाय । पुनरेव वरुणं पितर-मुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति ।
त होवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व । तपो ब्रह्मेति ।
स तपोऽतप्यत । स तपं–स्तप्त्वा ॥ 2.1
T.A.5.15.3
प्राणो ब्रह्मेति व्यंजानात्।
प्राणाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते । प्राणेन जातानि जीवन्ति ।
प्राणं प्रयन्त्यभि-सम् विशन्तीति ॥ तद् विज्ञाय ।
पुनरेव वरुणं पितर-मुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति ।
त्र होवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व । तपो ब्रह्मेति ।
स तपोऽतप्यत । स तप-स्तप्त्वा ॥ 3.1
T.A.5.15.4
मनो ब्रह्मेति व्यजानात् । मनसो होव खल्विमानि भूतानि जायन्ते ।
मनसा जातानि जीवन्ति । मनः प्रयन्त्यभि–सम् विशन्तीति ॥
तद् विज्ञाय । पुनरेव वरुणं पितर-मुपससार ।
अधीहि भगवो ब्रह्मेति । तं ए होवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व ।
तपो ब्रह्मेति । स तपोऽतप्यत । स तपं–स्तप्त्वा ॥ ४.1
```

```
T.A.5.15.5
विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्।
विज्ञाना-दृध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते ।
तद् विज्ञाय । पुनरेव वरुणं पितर-मुपससार ।
्। । । । । । । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । तं ्रहोवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व ।
तपो ब्रह्मेति । स तपोऽतप्यत । स तप-स्तप्त्वा ॥ 5.1
T.A.5.15.6
आनन्दो ब्रह्मेति व्यंजानात्।
आनन्दा-दृध्येव-खल्विमानि भूतानि जायन्ते ।
। । ।
आनन्देन जातानि जीवन्ति । आनन्दं प्रयन्त्यभि–सम्ँविशन्तीति ॥
सैषा भार्गवी वारुणी विद्या । परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता ॥
य एवं वैद प्रतितिष्ठति । अन्नवानन्नादो भवति ।
— । — । ।
महान् भवति प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेन ।
महान् कीर्त्या ॥ 6.1
```

3.3 अन्नब्रह्मोपासनम्

```
T.A.5.15.7
अन्नं न निन्द्यात् । तद् व्रतं ॥ प्राणो वा अन्नं । शरीरमन्नादं ।
प्राणे रारीरं प्रतिष्ठितं । रारीरे प्राणः प्रतिष्ठितः ।
तदेत-दन्न-मन्ने प्रतिष्ठितं ॥
स य एत-दन्न-मन्ने प्रतिष्ठितं वैद प्रतितिष्ठति ।
अन्नवा–नन्नादो भवति ।
। । । ।
महान् भवति प्रजया पशुभिर्-ब्रह्मवर्चसेन ।
महान् कीर्त्या ॥ 7.1
T.A.5.15.8
अन्नं न परिचक्षीत । तद् व्रतं । आपो वा अन्नं । ज्योतिरन्नादं ।
अफ्स् ज्योतिः प्रतिष्ठितं । ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः ।
तदेत-दन्न-मन्ने प्रतिष्ठितं ॥
स य एत-दन्न-मन्ने प्रतिष्ठितं वैद प्रतितिष्ठति ।
अन्नवा-नन्नादो भवति ।
महान् भवति प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेन ।
महान् कीर्त्या ॥ 8.1
```

पृथिव्या-माकाशः प्रतिष्ठितः । आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता ।

पृथिव्या-माकाशः प्रतिष्ठितः । आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता ।

तदेत-दन्न-मन्ने प्रतिष्ठितं ॥

स य एत-दन्न-मन्ने प्रतिष्ठितं वैद प्रतितिष्ठति ।

अन्नवानन्नादो भवति । महान् भवति प्रजया प्रशुभिर् ब्रह्मवर्चसेन ।

महान् कीर्त्या ॥ 9.1

<u>3.4</u> सदाचारप्रदर् शनम् । ब्रह्मानन्दानुभवः T.A.5.15.10

न कञ्चन वसतौ प्रत्यांचक्षीत । तद् व्रतं ॥
तस्माद्यया कया च विधया बह्वन्नं प्राप्नुयात् ॥
अराद्ध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते ॥ एतद्दै मुखतोऽन्नण् गुद्धं ।
मुखतोऽस्मा अन्नण् गुद्ध्यते । एतद्दै मद्ध्यतोऽन्नण् गुद्धं ।
मद्ध्यतोऽस्मा अन्नण् गुद्ध्यते । एदद्वा अन्ततोऽन्नण् गुद्धं ।
अन्ततोऽस्मा अन्नण् गुद्ध्यते । एदद्वा अन्ततोऽन्नण् गुद्धं ।
अन्ततोऽस्मा अन्नण् गुद्ध्यते । 10.1

य एवं वैद ॥ क्षेम इति वाचि । योगक्षेम इति प्राणापानयोः । । – । – । – । – । – । – कर्मेति हस्तयोः । गति–रिति पादयोः । विमुक्ति–रिति पायौ ।

```
इति मानुषीः समाज्ञाः ॥ अथ दैवीः । तृप्ति-रिति वृष्टौ ।
बल-मिति विद्युति । 10.2
यश इति पशुषु । ज्योतिरिति नक्षत्रेषु ।
प्रजाति–रमृत–मानन्द इत्युपस्थे । सर्व मित्याकाशे ॥
तत् प्रतिष्ठे-त्युपासीत । प्रतिष्ठावान् भवति । तन्मह इत्युपासीत ।
महान् भवति । तन्मन इत्युपासीत । मानवान् भवति । 10.3
।
तन्नम इत्युपासीत । नम्यन्तेऽस्मै कामाः । तद्ब्रह्मे–त्युपासीत ।
ब्रह्मवान् भवति । तद् ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत ।
पर्येणं म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः । परि येऽप्रिया भ्रातृव्याः ॥
स यश्चायं पुरुषे । यश्चासा-वादित्ये । स एकः । 10.4
स य एवं वित् । अस्माल्-लोकात् प्रेत्य ।
एतमन्नमय-मात्मान-मुपसङ्क्रम्य ।
एतं प्राणमय-मात्मान-मुपसङ्क्रम्य ।
एतं मनोमय-मात्मान-मुपसङ्क्रम्य।
एतं वैज्ञानमय-मात्मान-मुपसङ्क्रम्य।
```

```
एत मानन्दमय मात्मान मुपसङ्क्रम्य ।
इमान् लोकान् कामान्नी काम-रूप्यनुसञ्चरन्।
एतथ् साम गायन्नास्ते ॥ हा(3) वु हा(3) वु हा(3) वु । 10.5
अह-मन्न-मह-मन्न-महमन्नं।
अहमन्नादो(2)ऽहमन्नादो(2) ऽहमन्नादः ।
अह ७ २ लोककृ - दह ७ २ लोककृ - दह ७ २ लोककृत्।
अहमस्मि प्रथमजा ऋता(3) स्य ।
पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य ना(3) भा इ।
यो मा ददाति स इदेव मा(3)वाः।
अह-मन्न-मन्न-मदन्त-मा(3) दि।
अहं विश्वं भुवन-मभ्यभवां। सुवर्न ज्योतीः॥
य एवं वैद ॥ इत्युपनिषत् ॥ 10.6
सह ना ववतु । सह नौ भुनकु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
```

॥ इति भृगुवल्ली समाप्ता ॥

Korvai with starting Padams of 1, 11, 21 Series of Dasinis : (शम् नो – मह इत्यादित्यो – नो इतराण्य – सन्नेवा – – , – , नम् न निन्द्याच्यतुश्चत्वारिं्शत्) — — —

First and Last Padam in TA, 5th Prapaatakam :(श्रत्र - इत्युपनिषत्)

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

4 महा नारायणोपनिषत्

4.1 अम्भस्यपारे

प्र.व.6.1.1 अंभस्य पारे भुवनस्य मद्ध्ये नाकस्य पृष्ठे महतो महीयान् । शुक्रेण ज्योती एषि समनुप्रविष्टः प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः ॥ 1.1 यस्मिन्निद्ध्ं सञ्च विचैति सर्वं यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः । तदेव भूतं तदु भव्यमा इदं तदक्षरे प्रमे व्योमन्न् ॥ 1.2 येना वृतं खञ्च दिवं महीञ्च येनादित्य-स्तपित तेजसा भाजसा च । यमन्तः समुद्रे क्वयो वयन्ति यदक्षरे प्रमे प्रजाः ॥ 1.3

```
यदोषधीभिः पुरुषान् पशू अश्च विवेश भूतानि चराचराणि ॥ 1.4
यदेक-मव्यक्त-मनन्तरूपं विश्वं पुराणं तमसः परस्तात् ॥ 1.5
T.A.6.1.2
तदेवर्तं तदु सत्यमाहु-स्तदेव ब्रह्म परमं कवीनां।
इष्टापूर्तं बहुधा जातं जायमानं विश्वं बिभर्ति भुवनस्य नाभिः॥ 1.6
तदेवाग्नि-स्तद्वायु-स्तथ्सूर्यस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रममृतं तद्ब्रह्म तदापः स प्रजापतिः ॥ 1.7
सर्वे निमेषा जिन्तरे विद्युतः पुरुषादिधे ।
कला मुहूर्ताः काष्ठाश्चाहो-रात्राश्च सर्वशः ॥ 1.8
। । । ।
अद्र्धमासा मासा ऋतवः सम्वथ्सरश्च कल्पन्तां ।
स आपः प्रदुघे उभे इमे अन्तरिक्ष-मथो सुवः ॥ 1.9
नैन-मूद्र्धं न तियं च न मद्ध्ये परिजग्रभत्।
न तस्येशे कश्चन तस्य नाम महद्यशः ॥ 1.10
```

T.A.6.1.3

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनं ।

ा ा । । । । । । । । । । हदा मनीषा मनसाऽभि क्लृप्तो य एनं विदु-रमृतास्ते भवन्ति ॥ 1.11

Expansion of अद्भ्यः संभूत ः (Appearing in T.A.3.13.1) अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च । विश्वकर्मणः समवर्तताधि । वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं । आदित्य वर्णं तमसः परस्तात् । तमेवं विद्वानमृत इह भवति । नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥ 2 प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः । अजायमानो बहुधा विजायते । तस्य धीराः परिजानन्ति योनिः। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः॥३ यो देवेभ्य आतपति । यो देवानां पुरोहितः । पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ 4 , रुचं ब्राह्मं जनयन्तः । देवा अग्रे तदब्रुवन् । ॥ यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् । तस्य देवा असन् वशे ॥ 5

Expansion of हिरण्यगर्भः इत्यष्टौ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 1 यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव । ग - ग - ग - ग - ग - ग विधेम ॥ 2 इंशे अस्य द्विपद-श्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 2 ॥ । । । । । । । । य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 3 ्यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्र**्** रसया सहाऽऽहुः । यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 4 यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधिसूर उदितौ व्येति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 5

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढे येन सुवस् स्तिभतं येन नाकः।
यो अन्तिरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हिवषा विधेम ॥ ६
आपो ह यन्महृती विश्वमायन् –दक्षन्दधाना जनयन्ती –रिग्नं।
ततो देवाना –िन्नरवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हिवषा विधेम ॥ ७
यिश्वदापो महिना पर्यपञ्यद् –द्क्षन्दधाना जनयन्ती –रिग्नं।
यो देवेष्वधि देव येक आसीत् कस्मै देवाय हिवषा विधेम ॥ ८

Ref - T.S.4.1.8.3 to 4.1.8.6

अद्भ्यः संभूतो हिरण्यगर्भ इत्यष्टौ ॥

प्ष हि देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो हि जातः स उ गर्भे अन्तः ।

स विजायमानः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ्-मुखा स्तिष्ठति विश्वतोमुखः ॥ 1.12

विश्वतश्च-क्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात् ।

सं बाहुभ्यां नमित सं पत्रैर्-द्यावा पृथिवी जनयन् देव एकः ॥ 1.13

वेनस्तत् पश्यन्. विश्वा भुवनानि विद्वान्. यत्र विश्वं भवत्येक-नीळं ।

यस्मिन्निदण् सञ्च विचैकण् स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु ॥ 1.14

प्रतद्वोचे अमृतन्नु विद्वान् गन्धर्वो नाम निहितं गुहासु ।

T.A.6.1.4 त्रीणि पदा निहिता गुहासु यस्तद्वेद सवितुः पिताऽसत् ॥ 1.15 स नो बन्धुर्-जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । ्। । । । । । । । । । । । । यत्र देवा अमृतमान–शानास्तृतीये धामान्य-भ्यैरयन्त ॥ 1.16 परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः परि लोकान् परि दिशः परि सुवः । ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत् तदभवत् प्रजासु ॥ 1.17 परीत्य लोकान् परीत्य भूतानि परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च । प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्यात्मना-ऽऽत्मान-मभि-संबभूव ॥ 1.18 सदसस्पति–मद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यं । सनिं मेधा मयासिषं ॥ 1.19 उद्दीप्यस्व जातवेदो ऽपघ्नन्निऋर्.तिं ममं । T.A.6.1.5 पशू अ महामावह जीवनञ्च दिशो दिश ॥ 1.20 मानो हि एसी ज्ञातवेदो गामश्चं पुरुषं जगत्। अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ॥ 1.21

<u>4.2</u> <u>गायत्री मन्त्राः</u>

पुरुषस्य विद्य सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि । । " " " तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ 1.22 तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ 1.23 तत्पुरुषाय विद्यहे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ 1.24 ा । । तत्पुरुषाय विद्यहे चक्रतुण्डाय धीमहि । T.A.6.1.6 ा तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥ 1.25 ा । तत्पुरुषाय विद्यहे महासेनाय धीमहि। तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ 1.27

```
वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि।
ा
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ 1.28
नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ 1.29
। ।
वजनखाय विदाहे तीक्ष्ण—द⊎ष्ट्राय धीमहि ।
_ __
T.A.6.1.7
तन्नो नारसि ्हः प्रचोदयात् ॥ 1.30
भास्कराय विद्यहे महद्द्युतिकराय धीमहि।
तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् ॥ 1.31
वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि।
ा
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥ 1.32
। । ।
कात्यायनाय विद्यहे कन्यकुमारि धीमहि ।
ा
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥ 1.33
```

4.3 दूर्वा सूक्तं सहस्रपरमा देवी शतमूला शताङ्करा। सर्व ् हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्न नाशनी ॥ 1.34 काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषः परि । T.A.6.1.8 एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ 1.35 या रातेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहिस । तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयं ॥ 1.36 अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरा। ा । -- ॥ शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे ॥ 1.37 4.4 मृत्तिका सूक्तं भूमिर्-धेनुर् धरणी लोकधारिणी। उधृताऽसि वराहेण कृष्णेन रात बाहुना ॥ मृत्तिके हन मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतं । 1.38 मृत्तिके ब्रह्मदत्ताऽसि काञ्यपेनाभिमन्त्रिता। मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्विय सर्वं प्रतिष्ठितं ॥ 1.39

```
T.A.6.1.9
— ग
मृत्तिके प्रतिष्ठिते सर्वं तन्मे निर्णुद मृत्तिके ।
तया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिं ॥ 1.40
    <u>4.5</u> <u>शत्रुजय मन्त्राः</u>
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवन् छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जिह ॥ 1.41
स्वस्तिदा विशस्पतिर्-वृत्रहा विमृधों वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः ॥ 1.42
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु ॥ 1.43
॥ ।
आपान्त-मन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्-छरुमा ् ऋजीषी ।
सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानि देभुः॥ 1.44
T.A.6.1.10
ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्-विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि-मसतश्च विवः ॥ 1.45
स्योना पृथिवि भवा नृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ 1.46
```

```
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं ।
इंश्वरी ए सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥ 1.47
श्रीमें भजतु । अलक्ष्मीमें नश्यतु ।
विष्णुमुखा वै देवा इछन्दो-भिरिमान् लोका-ननपजय्य-
मभ्यजयन्न् । 1.48
महा एं इन्द्रो वज्रबाहुः षोडशी शर्म यच्छतु ॥
T.A.6.1.11
स्वस्ति नो मघवा करोतु हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि ॥ 1.49
सोमान ७ स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कक्षीवन्तं ँय औशिजं ।
ा । ।
शरीरं यज्ञशमलं कुसीदं तस्मिन् थ्सीदतु योऽस्मान् द्वेष्टि ॥ 1.50
तेन पवित्रेण शुद्धेन पूता अति पाप्मान-मरातिं तरेम ॥ 1.51
मजोषा इन्द्र सगणो मरुद्धिः सोमं पिब वृत्रहञ्छूर विद्वान् ।
जहि रात्रूण् रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ 1.52
```

```
सुमित्रा न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्मै
भूयासुर् योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः ॥ 1.53
आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन ।
T.A.6.1.12
महेरणाय चक्षसे । यो वः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयते ह नः ।
उशती-रिव मातरः । तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयंथा च नः ॥ 1.54
    <u>4.6</u> अघमर्षण सूक्तं
हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे देहि याचितः ।
यन्मया भुक्त-मसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः ॥ 1.55
यन्मे मनसा वाचा कर्मणा वा दुष्कृतं कृतं।
तन्न इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः सविता च पुनन्तु पुनः पुनः ॥ 1.56
नमोऽग्नये-ऽफ्सुमते नम इन्द्राय नमो वरुणाय नमो
वारुण्यै नमोऽद्भ्यः ॥ 1.57
T.A.6.1.13
यद्पां क्रूरं यदमेद्ध्यं यदशान्तं तदपगच्छतात्॥ 1.58
अत्याशना-दंतीपाना-द्यच्य उग्रात् प्रतिग्रहात् ।
```

```
तन्नो वरुणो राजा पाणिना ह्यवमर्.शतु ॥ 1.59
सोऽहमपापो विरजो निर्मुक्तो मुक्तकिल्बिषः ।
नाकस्य पृष्ठमारुह्य गच्छेद् ब्रह्मसलोकतां ॥ 1.60
यश्चाफ्सु वरुणः स पुनात्वधमर्षणः ॥ 1.61
इमं में गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोम ए सचता परुष्णिया।
असिक्निया मरुद्वृधे वितस्तया-ऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥ 1.62
म्रतञ्च सत्यञ्चा-भीद्धा त्तपसोऽद्ध्यजायत ।
ततो रात्रि-रजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ 1.63
T.A.6.1.14
समुद्रा-दर्णवा-दिध सम्वथ्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद् (मिदधद्) विश्वस्य मिषतो वशी ॥ 1.64
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्व मकल्पयत्।
- । । । । । । । । । । । दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्ष मथो सुवः ॥ 1.65
यत् पृथिव्या एं रजस्सव मान्तरिक्षे विरोदसी ।
इमा स्तदापो वरुणः पुनात्वधमर्.षणः ॥ 1.66a
```

```
पुनन्तु वसंवः पुनातु वरुणः पुनात्वंघमर्.षणः।
एष भूतस्य मद्ध्ये भुवनस्य गोप्ता ॥ 1.66b
एष पुण्यकृतां ँलोकानेष मृत्योर्. हिरण्मयं।
चावापृथिव्योर्. हिरण्मय ुं स⊌श्रित ुं सुवः।
T.A.6.1.15
स नः सुवः सर् शिशाधि ॥ 1.66c
आर्द्रं ज्वलति ज्योति-रहमस्मि । ज्योतिर्-ज्वलति ब्रह्माहमस्मि ।
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि ।
अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ॥ 1.67
अकार्य-कार्यव कीर्णी स्तेनो भ्रूणहा गुरुतल्पगः।
रजोभूमिस्त्वमा एं रोदयस्व प्रवदन्ति धीराः ॥ 1.69
आक्रान्थ्-समुद्रः प्रथमे विधर्म-ञ्जनयन् प्रजा भुवनस्य राजा ()।
वृषा पवित्रे अधिसानो अव्ये बृहथ् सोमो
वावृधे सुवान इन्दुः ॥ 1.70
```

(पुरस्ताद - यशो - गुहासु - मम - चक्रतुण्डाय धीमिह -तीक्षद = ष्ट्राय धीमिह - पिर - प्रतिष्ठितं - देभुर - यच्छतु -दधातना - दभ्यो - ऽर्णवः - सुवो - राजैकं च) (A1)

Special Korvai रुद्रो रुद्रश्च दिन्तिश्च निन्दः षण्मुख एव च । गरुडो ब्रह्म विष्णुश्च नारसि ्हस्तथैव च । आदित्योऽग्निश्च दुर्गिश्च क्रमेण द्वादशाम्भसि ।

Special Korvai म म व च म सु वे ना व भा वै कात्यायनाय ।

4.7 दुर्गा सूक्तं

ा तामिग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां।

दुर्गां देवी ् शरणमहं प्रपद्ये सुतरिस तरसे नमः ॥ 2.2

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्थ् स्वस्ति-भिरति दुर्गाणि विश्वा । प्रश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय राम्ँयोः ॥ 2.3 विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरिताऽतिपर्.षि । अग्ने अत्रिवन् मनसा गृणानोऽस्माकं बोद्ध्यविता तनूनां ॥ 2.4 पृतनाजित एं सहमान-मुग्रमग्नि एं हुवेम परमाथ् सधस्थात् । स नः पर्.षदित दुर्गाणि विश्वा क्षामदेवो अति दुरिताऽत्यग्निः () ॥ 2.5 प्रनोषि-कमीड्यो अद्ध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सिथ्सि । स्वाञ्चाग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यञ्च सौभगमायजस्व ॥ 2.6 गोभिर्-जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णो-रनुसञ्चरेम । नाकस्य पृष्ठमभि सम्वसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्तां ॥ 2.7 (दुरिताऽत्यग्निश्चत्वारि च) (A2) 4.8 व्याहृति होम मन्त्राः T.A.6.3.1 भू-रन्न-मग्नयं पृथिव्यै स्वाहा , भुवोऽन्नं वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा, स्वरन्न-मादित्याय दिवे स्वाहा,

भूर्भ्वस्सुव-रन्नं चन्द्रमसे दिग्भ्यः स्वाहा , नमों देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवस्सुव-रन्नमों ॥ 3.1 T.A.6.4.1 भ्-रग्नये पृथिव्यै स्वाहा, भूवो वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा, स्वरादित्यायं दिवे स्वाहा , भू-भूवस्सुव-श्चन्द्रमसे दिग्भ्यः स्वाहा, नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवस्सुव-रग्न ओं ॥ 4.1 T.A.6.5.1 भ्-रग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा, भ्वो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा, स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा, भू-र्भ्वस्स्व-श्रन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा, नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवस्सुवर् महरों ॥ 5.1 4.9 ज्ञानप्राप्त्यर्था होममन्त्राः T.A.6.6.1

पाहि नो अग्न एनसे स्वाहा । पाहि नो विश्ववेदसे स्वाहा । । । । । । यज्ञं पाहि विभावसो स्वाहा । सर्वं पाहि शतक्रतो स्वाहा ॥ 6.1 T.A.6.7.1

पाहि नो अग्न एकया। पाह्युत द्वितीयया। पाह्यूर्ज तृतीयया।

पाहि गीर्भि-श्रतसृभिर् वसो स्वाहा॥ 7.1

4.10 वेदाविस्मरणाय जपमन्त्राः

Т.А.6.8.1

यरछन्दसा-मृषभो विश्वरूप-रछन्दोभ्य रछन्दा ७स्या विवेश ।

सचा ० शिक्यः पुरो वाचोपनिष-दिन्द्रो ज्येष्ठ इन्द्रियाय ऋषिभ्यो

नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवस्सुव रछन्द ओं ॥ 8.1

Т.А.6.9.1

नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्व-निराकरणं-धारियता भूयासं

कर्णयोः श्रुतं माच्योढ्वं ममामुष्य ओं ॥ 9.1

4.11 तपः प्रशंसा

T.A.6.10.1

4.12 विहिताचरण प्रशंसा निषिद्धाचरण निन्दा च

<u>4.13</u> दहर विद्या

T.A.6.12.1 अणो-रणीयान् महतो महीया-नात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः। तमक्रतुं पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्-महिमानमीशं ॥ 12.1 । ॥ । । सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्माथ् सप्तार्चिषः समिधः सप्त जिह्नाः । सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशया-न्निहिताः सप्त सप्त ॥ 12.2 अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्माथ् स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः । अतश्च विश्वा ओषधयो रसाच्च येनैष भूत-स्तिष्ठत्यन्तरात्मा ॥ 12.3 ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीना-मृषिर्-विप्राणां महिषो मृगाणां । चयेनो गृधाणा७ स्वधितिर्-वनानाएं सोमः पवित्र मत्येति रेभन्न् ॥ 12.4 अजा मेकां ँलोहित-शुक्ल-कृष्णां बह्वीं प्रजां जनयन्ती एं सरूपां। अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्त-भोगामजोऽन्यः ॥ 12.5 T.A.6.12.2 ह एसः शुंचिषद् वसु-रन्तरिक्ष-सद्धोता वेदिष-दितिथिर्-दुरोणसत्। नृषद्वर-सद्त-सद् व्योम-सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ 12.6

घृतं मिमिक्षिरे घृतमस्य योनिर्-घृते श्रितो घृतमुवस्य धाम । अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ विक्ष हव्यं ॥ 12.7 समुद्रा दूर्मिर्-मधुमा ए उदार-दुपा एशुना सममृतत्व मानट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवाना-ममृतस्य नाभिः ॥ 12.8 वयं नाम प्रब्रवामा घृतेनास्मिन्. यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गो ऽवमीद् गौर एतत् ॥ 12.9 चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्.षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या 💇 आविवेश ॥ 12.10 T.A.6.12.3 त्रिधा हितं पणिभिर् गुह्यमानं गवि-देवासो घृतमन्वविन्दन्न् । इन्द्र एक एं सूर्य एकं जजान वेना देक एं स्वधया निष्टतक्षुः ॥ 12.11 यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद् विश्वाधियों रुद्रो महर्.षिः । हिरण्यगर्भं पञ्चत जायमान ए सनो देवः शुभया स्मृत्या सम्युनकु ॥ 12.12 यस्मात्परं नापर मस्ति किञ्चिद्यस्मान् नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित् । वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठ-त्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वं ॥ 12.13

```
(सन्यास सूक्तम्)
```

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः । परेण नाकं निहितं गुहायां विभाजदेतद् यतयो विशन्ति ॥ 12.14 वेदान्त विज्ञान-सुनिश्चितार्थाः सन्यास योगाद्यतयः शुद्ध सत्त्वाः । ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे () ॥ 12.15 दहं विपापं परमेश्म भूतं यत् पुण्डरीकं पुरमद्ध्य स७स्थं। तत्रापि दहुं गगनं विशोक – स्तस्मिन्. यदन्तस्त – दुपासितव्यं ॥ 12.16 यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्य प्रकृति-लीनस्य यः परः स महेश्वरः ॥ 12.17 (अजोऽन्य – आविवेश – सर्वे चत्वारि च) (A12) 4.14 नारायण सूक्तं T.A.6.13.1 सहस्रशीर्.षं देवं विश्वाक्षं विश्व शं भुवं । विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदं॥ 13.1 विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायण् हिरं। विश्वमेवेदं पुरुष-स्तद् विश्वमुपजीवति ॥ 13.2

```
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरण् ज्ञाश्वतण् ज्ञिवमच्युतं ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणं ॥ 13.3
नारायण परो ज्योतिरात्मा नारयणः परः ।
नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः ।
नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ॥ 13.4
यच्च किञ्चिज्-जगथ् सर्वं दृश्यते श्रू<u>य</u>तेऽपि वा ।
T.A.6.13.2
अन्तर् बहिश्च तथ् सर्वं ँव्याप्य नारायणः स्थितः ॥ 13.5
अनन्त मव्ययं कवि एं समुद्रेऽन्तं विश्व शंभुवं।
पद्मकोश-प्रतीकाश् हृदयं चाप्यधोमुखं ॥ 13.6
अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ।
ज्वालमाला कुलं भाती विश्वस्यायतनं महत् ॥ 13.7
सन्तत्र शिलाभिस्तु लंबत्या कोशसन्निभं।
तस्यान्ते सुषिरण् सूक्ष्मं तस्मिन्थ् सर्वं प्रतिष्ठितं ॥ 13.8
```

```
तस्य मद्ध्ये महानग्निर् विश्वार्चिर् विश्वतो मुखः ।
सोऽग्रभुग् विभजन् तिष्ठन्–नाहार–मजरः कविः।
तिर्यगूर्ध्व मधः शायी रश्मयस्तस्य सन्तता ( ) ॥ 13.9
सन्तापयति स्वं देहमापादतल मस्तकः।
तस्य मद्ध्ये वहिशिखा अणीयोद्ध्वा व्यवस्थितः ॥ 13.10
नीलतो यद मद्ध्यस्थाद् विद्युल्लेखेव भास्वरा।
नीवार शूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा ॥ 13.11
ा । । । । तस्याः शिखाया मद्ध्ये परमात्मा व्यवस्थितः ।
स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् ॥ 13.12
(अपि वा – सन्तता षट् च) (A13)
    4.15 आदित्य मण्डले परब्रह्मोपासनं
T.A.6.14.1
आदित्यो वा एष एतन् मण्डलं तपति तत्र ता ऋचस्तदृचा मण्डल 🛫
स ऋचां लोकोऽथय एष एतस्मिन् मण्डलेऽर्चिर् दीप्यते तानि सामानि
स साम्नां "लोकोऽथ य एष एतस्मिन् मण्डलेऽर्चिषि
```

पुरुषस्तानि यजू्धि स यजुषा मण्डल् स यजुषां लोकः सैषा — । । । । — । । । न त्रय्येव विद्या तपति य एषोऽन्त-रादित्ये हिरण्मयः पुरुषः ॥ 14.1

4.16 आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्व प्रदर्शनं

ग्राहित्यो वै तेज ओजो बलं यश्—श्रक्षः श्रोत्रमात्मा मनो
मन्युर्-मनुर्-मृत्युः सत्यो मित्रो वायुराकाशः प्राणो लोकपालः
कः किं कं तथ् सत्यमन्न-ममृतो जीवो विश्वः कतमः स्वयंभु ब्रह्मै
तदमृत एष पुरुष एष भूताना-मधिपतिर्-ब्रह्मणः सायुज्यण् सलोकतामाप्नो-त्येतासामेव देवतानाण् सायुज्यण् सार्षिताण् समान
लोकता-माप्नोति य एवं वैदेत्युपनिषत् ॥ 15.1

4.17 शिवोपासन मन्त्राः

T.A.6.16.1

निधनपतये नमः । निधनपतान्तिकाय नमः ।

ऊद्र्धाय नमः । ऊद्र्धलिङ्गाय नमः ।

हिरण्याय नमः । हिरण्यलिङ्गाय नमः ।

सुवर्णाय नमः । सुवर्णलिङ्गाय नमः ।

दिव्याय नमः । दिव्यलिङ्गाय नमः । 16.1a

```
T.A.6.16.2
```

```
भवाय नमः । भवलिङ्गाय नमः ।
शर्वाय नमः । शर्वलिङ्गाय नमः ।
शिवाय नमः । शिवलिङ्गाय नमः ।
ज्वलाय नमः । ज्वललिङ्गाय नमः ।
आत्माय नमः । आत्मलिङ्गाय नमः ।
परमाय नमः । परमलिङ्गाय नमः ।
एतथ्सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिङ्गं एतथ्सोमस्य पाणिमन्त्रं पवित्रं ॥ 16.1b
```

4.18 पश्चिमवक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः

T.A.6.17.1 सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे भवस्व मां। भवोद्भवाय नमः॥ 17.1

4.19 उत्तर वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः

T.A.6.18.1

वामदेवाय नमीं ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमी रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ 18.1

<u>4.20</u> <u>दक्षिण वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः</u>

T.A.6.19.1 अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । -॥ - ॥ - ॥ - । सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ 19.1

4.21 प्राग्वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः

 $\frac{\text{T.A.6.20.1}}{\text{I}}$ । । । । । । । । । । । । । तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ 20.1

4.22 ऊर्ध्व वक्त्र प्रतिपादक मन्त्रः

4.23 नमस्कारात्र्थ मन्त्राः

T.A.6.22.1

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥ 22.1

T.A.6.23.1

ऋत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलं । - । । । । । । । ऊद्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥ 23.1

T.A.6.24.1

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ।

""

पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः ।

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।
सर्वो होष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥ 24.1

T.A.6.25.1

कदुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शन्तमण् हदे ॥
सर्वो होष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥ 25.1

4.24 अग्निहोत्र हवण्याः उपयुक्तस्य वृक्ष विशेष—स्याभिधानम् T.A.6.26.1

यस्य वै कङ्कत्यग्नि–होत्रहवणी भवति प्रत्येवा–स्याहुतय– - प्रतिष्ठित्ये ॥ 26.1

4.25 रक्षोघ्न मन्त्र निरूपणं

T.A.6.27.1 (This Expansion is appearing in T.S.1.2.14.1 for क्णुष्व पाज इति पञ्च । कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजे वामवा ु इभेन । कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजे वामवा ु इभेन । तृष्वीमनु प्रसितिं द्रणानोऽस्ताऽसि विद्ध्य रक्ष सस्तिपिष्ठैः ॥ 27.1 तव भ्रमास आञ्ज्या पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः । तप् अध्यग्ने जुह्वा पतंगान सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः ॥ 27.2

प्रतिस्पशो विसृज तूर्णि तमो भवा पायुर् विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघश्र एसो यो अन्त्यग्ने मािकष्टे व्यथिरा

दधर्.षीत् ॥ 27.3

पो नो अराति ए सिमधान चक्रे नीचातं धक्ष्यत सन्न शुष्कं ॥ 27.4

ऊद्र्ध्वो भव प्रतिविद्ध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।

अवस्थिरा तनुहि यातु जूनां जािममजािमं प्रमृणीिह शत्रून् ॥ 27.5

कृणुष्व पाज इति पञ्च ॥ 27

4.26 भूदेवताक मन्त्रः

4.27 सर्वा देवता आपः

```
इछन्दा ७स्यापो ज्योती ७ष्यापो यजू ७ष्यापः सत्यमापः सर्वा
देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ॥ 29.1
    <u>4.28</u> सन्ध्यावन्दन मन्त्राः
T.A.6.30.1
आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु मां ।
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर् ब्रह्म पूता पुनातु मां ॥ 30.1
यदुच्छिष्ट-मभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम ।
सर्वं पुनन्तु मामापो-ऽसताञ्च प्रतिग्रह ७ स्वाहा ॥ 30.2
T.A.6.31.1
अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः ।
पापेभ्यो रक्षन्तां । यदहा पापमकार्.षं ।
मनसा वाचा हस्ताभ्यां । पद्भ्या-मुदरेण शिञ्ना ।
अहस्तदंवलुंपतु । यत्किञ्चं दुरितं मयि ।
इदमह-माममृत योनौ । सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥ 31.1
T.A.6.32.1
सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः ।
पापेभ्यो रक्षन्तां । यद्रात्रिया पापमकार्.षं ।
मनसा वाचा हस्ताभ्यां । पद्भ्या-मुदरेण शिञ्ना ।
```

गित्र-स्तदवलुंपतु । यत्किञ्च दुरितं मिय । - ग इदमह-माममृत योनौ । सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥ 32.1

4.29 प्रणवस्य ऋष्यादि विवरणं

T.A.6.33.1 ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म । अग्निर्देवता ब्रह्म इत्यार्.षं । । गायत्रं छन्दं परमात्मं सरूपं । सायुज्यं विनियोगं ॥ 33.1

4.30 गायत्र्यावाहन मन्त्राः

T.A.6.34.1 आयातु वरदा देवी अक्षरं ब्रह्म संमितं। गायत्रीं छन्दसां मातेदं ब्रह्म जुषस्व मे । 34.1 यदहात् कुरुते पापं तदहात् प्रतिमुच्यते । यद् रात्रियात् कुरुते पापं तद् रात्रियात् प्रतिमुच्यते । सर्व वर्णे महादेवि सन्ध्या विद्ये सरस्वति ॥ 34.2 T.A.6.35.1 ओजोऽसि सहोऽसि बलमिस भ्राजोऽसि देवानां धामनामाऽसि विश्वमिस विश्वायुः सर्वमिस सर्वायु-रिभभूरों-गायत्री-मावाहयामि सावित्री-मावाहयामि सरस्वती-मावाहयामि छन्दर्.षी-नावाहयामि श्रिय-मावाहयामि गायत्रिया गायत्री छन्दो विश्वामित्र

ऋषिः सविता देवताऽग्निर्मुखं ब्रह्मा शिरो विष्णुर्.हृदय् रुद्रः शिखा पृथिवीयोनिः प्राणापान-व्यानोदान-समाना सप्राणा श्वेतवर्णा साङ्ख्यायन-सगोत्रा गायत्री चतुर्वि ्शत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः पञ्च शीर्.षोपनयने विनियोग, 35.1

ओं भूः।ओं भुवः।ओं स्तवः।ओं महः।ओं जनः।
ओं तपः।ओं सत्यं।ओं तथ् सिवतुर्वरेण्यं भर्गी देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्।

ओमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरों ॥ 35.2

<u>4.31</u> <u>गायत्री उपस्थान मन्त्राः</u>

4.32 आदित्यदेवता मन्त्रः

T.A.6.37.1 घृणिः सूर्य आदित्यो न प्रभा-वात्यक्षरं । मधुक्षरन्ति तद् रसं । सत्यं वै तद् रस-मापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरों ॥ 37.1 4.33 त्रिस्पर्णमन्त्राः T.A.6.38.1 ब्रह्म मेतु मां। मधु मेतु मां। ब्रह्म-मेव मधु मेतु मां॥ यास्ते सोम प्रजावथ्सो-ऽभिसो अहं । दुःष्वप्नहन् दुरुष्वह । यास्ते सोम प्राणा ७ स्तां जुहोमि ॥ । । । त्रिसुपर्ण मयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् । ब्रह्महत्यां वा एते घनन्ति । ये ब्राह्मणा-स्त्रिस्पर्णं पठन्ति । ते सोमं प्राप्नुवन्ति । आसहस्रात् पंक्तिं पुनन्ति । ओं ॥ 38.1 अद्या नो देव सवितः प्रजावथ्सावीः सौभगं। ा । परा दुःष्वप्निय्ं सुव । विश्वानि देव सवितर्-दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्म आसुव ॥ 39.1 मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माद्ध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ 39.2

```
मधुनक्त मुतोषसि मधुमत् पार्थिव एंरजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ 39.3
मधुमान्नो वनस्पतिर्-मधुमा 🗸 अस्तु सूर्यः ।
माद्ध्वी र्गावो भवन्तु नः ॥ 39.4
य इमं त्रिसुपर्ण-मयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ 39.5
भूणहत्यां ँवा एते घनन्ति । ये ब्राह्मणा-स्त्रिसुपर्णं पठन्ति ॥ 39.6
ते सोमं प्राप्नुवन्ति । आसहस्रात् पंक्तिं पुनन्ति । ओं ॥ 39.7
T.A.6.40.1
जहा मेथवा। मधु मेथवा। ब्रह्ममेव मधु मेथवा॥ 40.1
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीना-मृषिर् विप्राणां महिषो मृगाणां ।
२येनो गृद्धाणा७ स्वधितिर्-वनाना७ सोमः पवित्र-मत्येति रेभन्न् ॥ 40.2
ह्रथ्सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सब्द्योता – वेदिष – दतिथिर् – दुरोणसत् ।
नृषद्वर-सदृत-सद् व्योम-सदब्जा- गोजा ऋतजा
अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ 40.3
ऋचेत्वा रुचेत्वा समिथ् स्रवन्ति सरितो न धेनाः।
अन्तर्. हृदा मनसा पूयमानाः।
```

्यातस्य धारा अभिचाकशीमि । हिरण्ययो वेतसो मद्ध्य आसां ॥ ४०.४ तस्मिन्थ् सुपर्णो मधुकृत् कुलायी भजन्नास्ते मधु देवताभ्यः । तस्या सते हरयः सप्ततीरे स्वधां दुहाना अमृतस्य धारां ॥ 40.5 य इदं त्रिसुपर्ण-मयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् । - । । । । वीरहत्यां वा एते घनन्ति । ये ब्राह्मणा-स्त्रिसुपर्णं पठन्ति । ते सोमं प्राप्नुवन्ति । आसहस्रात् पंक्तिं पुनन्ति । ओं ॥ 40.6 4.34 मेधा सूक्तं T.A.6.41.1 ——— । ॥ । । । । मेधादेवी जुषमाणा न आगाद् विश्वाची भद्रा सुमनस्य माना । त्वया जुष्ट ऋषिर् भवति देवि त्वया ब्रह्माऽऽगतश्री रुत त्वया । त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सा नो जुषस्व द्रविणो नमेधे ॥ 41.1 T.A.6.42.1 मेधां म इन्द्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती। - । । । । मेधां मे अश्विना-वुभावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥

अफ्सरासुं च या मेधा गन्धर्वेषुं च यन्मनः ।

देवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर् जुषता स्वाहा ॥ 42.1

T.A.6.43.1

आमां मेधा सुरभिर् विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या ।

ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्तां ॥ 43.1

T.A.6.44.1

मियी मेधां मियी प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु मियी मेधां मियी प्रजां मियीन्द्र इन्द्रियं दधातु मियी मेधां मियी प्रजां सियी प्रजां मियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियीन्द्र इन्द्रियं दधातु मियी मेधां मियी प्रजां मियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियी प्रजां सियीन्द्र इन्द्रियं दिधातु सियी मेधां सियी प्रजां सियी प्रजां सियी सियी प्रजां सियीने सियी प्रजां सियीने सियीन

4.35 मृत्युनिवारण मन्त्राः

पणं वनस्पते रिवाभिनः शीयता ए रिवाभिनः शियता ए रिवाभिनः शिवाभितः ॥ ४५.1 स्त.6.46.1 ॥ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्तेस्व इतरो देवयानात् । ॥ चशुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा ए रिरिषो मोत वीरान् ॥ ४६.1 स्त.6.47.1 ॥ ॥ ॥ वनस्य गोपाः ॥ वातं प्राणं मनसा न्वारभामहे प्रजापितं यो भुवनस्य गोपाः ॥ सनो मृत्यो स्त्रायतां पात्व एहसो ज्योग् जीवा ज्रामशीमिहि ॥ ४७.1

```
T.A.6.48.1
अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभिशस्तेर मुञ्चः ।
प्रत्यौहता मिश्वना मृत्यु मस्माद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥ 48.1
T.A.6.49.1
हिरिं हरन्त- मनुयन्ति देवा विश्वस्येशानं वृषभं मतीनां।
ब्रह्म सरूप-मनुमेदमागा-दयनं मा विवधीर् विक्रमस्व ॥ 49.1
T.A.6.50.1
शल्कैरग्नि-मिन्धान उभौ लोकौ सनेमहं।
उभयो र्लोकयार्. ऋध्द्वाऽति मृत्युं तराम्यहं ॥ 50.1
T.A.6.51.1
मा छिदो मृत्यो मा वधीर्मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषी:।
प्रजां मा मे रीरिष आयुरुग्र नृचक्षसं त्वा हविषा विधेम ॥ 51.1
T.A.6.52.1
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितं।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः ॥ 52.1
T.A.6.53.1
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मा नो रुद्र भामितोवधीर्. – हविष्मन्तो नमसा विधेम ते ॥ 53.1
```

<u>4.36</u> प्रजापति–प्रार्त्थना मन्त्रः

4.37 इन्द्रप्रार्थना मन्त्रः

4.38 मृत्युञ्जय मन्त्राः

4.39 पापनिवारका मन्त्राः

T.A.6.59.1 देवकृतस्यैनसो-ऽवयजनमसि स्वाहा। - । । । । ॥ मनुष्यकृतस्यैनसो ऽवयजनमसि स्वाहा।

4.40 वसु-प्रार्थना मन्त्रः

T.A.6.60.1

यद्यो देवाश्चकृम जिह्नया गुरुमनसो वा प्रयुती देव हेडनं ।

यद्यो तेवाश्चकृम जिह्नया गुरुमनसो वा प्रयुती देव हेडनं ।

अरावायो नो अभिदुच्छुनायते तस्मिन् तदेनो वसवो

ा ॥

निधेतन स्वाहा ॥ 60.1

4.41 कामोऽकार्षीत् – मन्युरकार्षीत् मन्त्रः

T.A.6.61.1 वामोऽकार्षीन् नमो नमः ।

कामोऽकार्षीत् कामः करोति नाहं करोमि कामः कर्ता नाहं

```
कर्ता कामः कारयिता नाहं कारयिता एष ते काम
कामाय स्वाहा ॥ 61.1
T.A.6.62.1
मन्यूरकार्षीन् नमो नमः।
मन्युरकार्षीन् मन्युः करोति नाहं करोमि मन्युः कर्ता नाहं कर्ता मन्युः
कारियता नाहं कारियता एष ते मन्यो मन्यवे स्वाहा ॥ 62.1
    4.42 विरजा होम मन्त्राः
T.A.6.63.1
तिलाञ्जुहोमि सरसाएं सपिष्टान् गन्धार मम चित्ते रमन्तु स्वाहा ॥ 63.1
गावो हिरण्यं धनमन्नपानं सर्वेषां श्रीयै स्वाहा ॥ 63.2
श्रियञ्च लक्ष्मिञ्च पुष्टिञ्च कीर्तिं चा नृण्यतां।
।
ब्रह्मण्यं बहुपुत्रतां । श्रब्द्वामेधे प्रजाः सन्ददातु स्वाहा ॥ 63.3
T.A.6.64.1
तिलाः कृष्णा–स्तिलाः श्वेता–स्तिलाः सौम्या वंशानुगाः ।
तिलाः पुनन्तु मे पापं यत्किञ्चिद् दूरितं मयि स्वाहा ॥ 64.1
चोरस्यान्नं नवश्राद्धं ब्रह्महा गुरुतल्पगः ।
गोस्तेय एं सुरापानं भ्रूणहत्या तिला शान्ति ए शमयन्तु स्वाहा ॥ 64.2
```

श्रीश्च लक्ष्मीश्च पुष्टीश्च कीर्तिं चा नृण्यतां । ब्रह्मण्यं बहुपुत्रतां । श्रद्धामेधे प्रज्ञात् जातवेदः संददात् स्वाहा ॥ 64.3 T.A.6.65.1 प्राणापान-व्यानोदान-समाना में शुद्ध्यन्तां ्रा । । । । । । । । । ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ **65.1** वाङ्-मन-श्रक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-रेतो-बुद्ध्याकूतिः सङ्कल्पा । । । । । । । । । । । । । । में शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 65.2 त्वक्-चर्म-मा ्स-रुधिर-मेदो-मज्जा-स्नायवो-ऽस्थीनि । । । । । । । । । । । । । में शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 65.3 शिरः पाणि पाद पार्श्व पृष्ठो-रूदर-जङ्ग-शिश्र्नोपस्थ पायवो । । । । । । । । । । । । । । में शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 65.4 उत्तिष्ठ पुरुष हरित-पिङ्गल लोहिताक्षि देहि देहि ददापयिता । । । । । । । । । । । । । में शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 65.5 T.A.6.66.1 पृथिव्याप स्तेजो वायु-राकाशा मे शुद्ध्यन्तां

```
शब्द-स्पर्.श-रूपरस-गन्धा मे शुद्ध्यन्तां
्रा । । । । । । । । । ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 66.2
मनो-वाक्-काय-कर्माणि मे शुद्ध्यन्तां
्रा । । । । — । । ज्योति रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा ॥ 66.3
अव्यक्तभावै-रहङ्कारैर् ज्योति रहं ँविरजा विपाप्मा
.
भूयास७ स्वाहा ॥ 66.4
आत्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विरजा विपाप्मा
भूयास ७ स्वाहा ॥ 66.5
अन्तरात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विरजा विपाप्मा
.
भूयास७ स्वाहा ॥ 66.6
परमात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योति रहं विँरजा विपाप्मा
भूयास७ स्वाहा ॥ 66.7
॥ । ॥
क्षुधे स्वाहा । क्षुत्पिपासाय स्वाहा ।
ं। ॥ । – ॥ ॥ ॥ ॥
विविट्यै स्वाहा । ऋग्विधानाय स्वाहा । कषोत्काय स्वाहा ॥ 66.8
```

```
क्षुत्पिपासामलं ज्येष्ठामलक्ष्मीर् नांशयाम्यहं।
अभूति-मसमृद्धिञ्च सर्वां (सर्वा) निर्णुद मे पाप्मान्थ स्वाहा ॥ ६६.९
अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञानमय-मानन्दमय-मात्मा
4.43 वैश्वदेव मन्त्राः
T.A.6.67.1
ओषधिवनस्पतिभ्यः स्वाहा । 67.1
T.A.6.67.2
रक्षोदेवजनेभ्यः स्वाहा ।
- ॥ - ॥ - - ॥ - - ॥
सर्वभूतेभ्यः स्वाहा । कामाय स्वाहा । अन्तरिक्षाय स्वाहा ।
यदेजति जगति यच्च चेष्टति नाम्नो भागोऽयं नाम्ने स्वाहा ।
पृथिव्यै स्वाहा । अन्तरिक्षाय स्वाहा । 67.2
```

```
T.A.6.67.3
त्रिवे स्वाहा। सूर्याय स्वाहा। चन्द्रमसे स्वाहा। नक्षत्रेभ्यः स्वाहा।
ा ॥ । । । । । । । । । । । । इन्द्राय स्वाहा । बृहस्पतये स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा ।
। – ॥ – ॥
ब्रह्मणे स्वाहा । स्वधा पितृभ्यः स्वाहा ।
ा । । ॥
नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा । 67.3
T.A.6.67.4
देवेभ्यः स्वाहा । पितृभ्यः स्वधाऽस्तु । भूतेभ्यो नमः ।
यथा कूपः शतधारः सहस्रधारो अक्षितः ।
एवा में अस्तु धान्य एं सहस्रधार – मक्षितं । धनधान्यै स्वाहा ॥
ये भूताः प्रचरन्ति दिवानक्तं बलि-मिच्छन्तो वितुदस्य प्रेष्याः ( ) ।
तेभ्यो बलिं पुष्टिकामो हरामि मयि पुष्टिं पुष्टिंपतिर् दधातु
स्वाहा ॥ 67.4
(ओषधिवनस्पतिभ्यः स्वाहा – उन्तरिक्षाय स्वाहा – नमी रुद्राय
पशुपतये स्वाहां – वितुदस्य प्रेष्या एकं च) (A67)
T.A.6.68.1
औं तद् ब्रह्म । ओं तद् वायुः । ओं तदात्मा । ओं तथ् सत्यं ।
भा । । । । । अों तत् पुरोर् नमः ॥ 68.1
```

```
अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्व मूर्तिषु ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्व-मिद्रस्त्वं रद्रस्त्वं वषणुस्त्वं
ब्रह्मत्वं प्रजापतिः ।
त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरों ॥ 68.2
    4.44 प्राणाहृति मन्त्राः
T.A.6.69.1
श्रद्धायां प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि ।
श्रद्धायामपाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि ।
ण ।
श्रद्धायां च्याने निविष्टोऽमृतं जुहोमि ।
श्रद्धायामुदाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि ।
श्रद्धाया 🗸 समाने निर्विष्टो ऽमृतं जुहोमि ।
ब्रह्मणि म आत्माऽमृतत्वाय ॥ 69.1
अमृतोपस्तरणमसि॥ 69.2
शब्दायां प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि ।
शिवो मा विशाप्रदाहाय । प्राणाय स्वाहा ।
श्रद्धायामपाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि ।
ा
शिवो मा विशाप्रदाहाय । अपानाय स्वाहा ।
```

अमृतापिधानमसि ॥ 69.4

4.45 भुक्तान्नाभिमन्त्रण मन्त्राः

4.46 भोजनान्ते आत्मानुसन्धान मन्त्राः

T.A.6.71.1

अङ्गृष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गृष्ठञ्च समाश्रितः ।

ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणाति विश्वभुक् ॥ 71.1

4.47 अवयवस्वस्थता प्रार्त्थना मन्त्रः

T.A.6.72.1

वाङ्म आसन्न् । नसोः प्राणः । अक्ष्यो-श्रक्षुः । कर्णयोः श्रोत्रं ।

वाहुवोर् बलं । ऊरुवो रोजः । अरिष्टा विश्वान्यङ्गानि तनूः ।

तनुवा मे सह नमस्ते अस्तु मा मा हि ्सीः ॥ 72.1

4.48 इन्द्र सप्तर्षि संवाद मन्त्रः

4.49 हृदयालंभन मन्त्रः

T.A.6.74.1

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः । ॥ तेनान्नेना-प्यायस्व ॥ 74.1

4.50 देवता प्राणनिरूपण मन्त्रः

T.A.6.75.1

नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि॥ 75.1

4.51 अग्नि स्तुति मन्त्रः

T.A.6.76.1 त्वमग्ने द्युभि-स्त्वमाशु-शुक्षणि-स्त्वमद्भ्य-स्त्वमश्मनस्परि । ा - । - । - । त्वं वनेभ्य-स्त्वमोषधीभ्य-स्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः ॥ 76.1

4.52 अभीष्ट याचना मन्त्रः

4.53 पर तत्त्व निरूपणं

मत्यं परं परं परं सत्यं सत्यं न सुवर्गा-ल्लोकाच्च्यवन्ते कदाचन सता ह हि सत्यं तस्माथ् सत्ये रमन्ते, (78.1)

तप इति तपो नानशनात् परं यद्ध परं तपस्तद् दुधर्. र्षं तद् दुग्धर्. र्षं तद् दुग्धर्. र्षं तस्मात् तपिस रमन्ते, (78.2)

दम इति नियतं ब्रह्मचारिण-स्तस्माद् दमे रमन्ते, (78.3)

शम इत्यरण्ये मुनय-स्तस्माच्छमे रमन्ते, (78.4)

दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशिष्सन्ति दानान्नाति दुश्चरं ॥ । । तस्माद् दाने रमन्ते, (78.5)

धर्म इति धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं धर्मान्नाति – दुष्करं - ॥ - । - । - । - । - । - । तस्माद् – धर्मे रमन्ते, (78.6)

प्रजन इति भूया एस – स्तस्माद् भूयिष्ठाः प्रजायन्ते तस्माद् भूयिष्ठाः प्रजनने रमन्ते, (78.7)

यज्ञ इति यज्ञो हि देवा स्तस्माद् यज्ञे **रमन्ते**, (78.9)

मानस-मिति विद्वाण्स-स्तस्माद् विद्वाण्स एव मानसे **रमन्ते, (78.10)**

4.54 ज्ञान साधन निरूपणं

T.A.6.79.1 प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णेयः प्रजापतिं पितर–मुपससार किं -- । । भगवन्तः परमं वदन्तीति तस्मै **प्रोवाच,** (79.1) सत्येन वायुरावाति सत्ये-नादित्यो रोचते दिवि सत्यं वाचः प्रतिष्ठा सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माथ् सत्यं **परमं वदन्ति**, (79.2) ा । । । । । । । । तपसा देवा देवता-मग्र आयन् तपसर्.षयः सुवरन्व-विन्दन् तपसा परमं वदन्ति, (79.3) ् दमेन दान्ताः किल्बिष-मवधून्वन्ति दमेन ब्रह्मचारिणः सुवरगच्छन् दमो भूतानां दुराधर्.षं दमे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद् दमः परमं ^{*}वदन्ति, (79.4) शमेन शान्ताः शिव-माचरिन्त शमेन नाकं मुनयो-ऽन्वविन्दन् छमो ॥ - । - । - । - । भूतानां दुराधर्.षं छमे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माच्छमः **परमं वदन्ति**, (79.5) दानं यज्ञानां वरूथं दक्षिणा लोके दातार ् सर्व भूतान्युपजीवन्ति दानेनाराती-रपानुदन्त दानेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति दाने सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद दानं **परमं वदन्ति**, (79.6) धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति धर्मेण पाप-मपनुदति धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद् धर्मं **परमं वदन्ति, (79.7)** ग्नयो वै त्रयी विद्या देवयानः पन्था गार्.हपत्य ऋक्-पृथिवी रथन्तर-मन्वाहार् यपचनं "यजुरन्तरिक्षं "वामदेव्य माहवनीयः सामसुवर्गो लोको बृहत्-तस्मा-दग्नीन् परमं वदन्त्य, (79.9) गिनहोत्र एं सायं प्रातर्-गृहाणां-निष्कृतिः स्विष्ट एं सुहुतं यज्ञकतूनां प्रायण ए सुवर्गस्य लोकस्य ज्योति - स्तस्मा - दिग्निहोत्रं . परमं वदन्ति, (79.10)

यज्ञ इति यज्ञेन हि देवा दिवं गता यज्ञेनासुरा-नपानुदन्त यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद् यज्ञं . परमं ँवदन्ति, (79.11)

ऋषयः प्रजा असृजन्त मानसे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मान् मानसं **परमं ँवदन्ति,** (79.12)

न्यास इत्याहुर् मनीषिणो ब्रह्माणं ब्रह्मा विश्वः कतमः स्वयंभुः प्रजापतिः सम्वथ्सर इति, (79.13)

सम्वथ्सरो ऽसावादित्यो य एष आदित्ये पुरुषः स परमेष्ठी ब्रह्मात्मा, (79.14)

याभिरादित्य-स्तपति रिश्मिभस्ताभिः पर्जन्यो वर्.षति पर्जन्ये-नौषधि-वनस्पतयः प्रजायन्त ओषधि-वनस्पतिभि-रन्नं भवत्यन्नेन प्राणाः प्राणैर् बलं बलेन तप-स्तपंसा श्रद्धा श्रद्धया मेधा मेधया मनीषा मनीषया मनो मनसा शान्तिः शान्त्यां चित्तं चित्तेन स्मृति स्मृत्या स्मार स्मारेण विज्ञानं विज्ञानं – नात्मानं वैदयति तस्मादन्नं ददन्थ् सर्वाण्येतानि

स वा एष पुरुषः पञ्चधा पञ्चात्मा येन सर्वमिदं प्रोतं पृथिवी नित्रिक्षं च द्यौश्च दिशश्चावान्तरिदशाश्च स वै सर्वमिदं जगथ्स नि नित्र नित्रश्चावान्तरिक्षं च प्राश्च दिशश्चावान्तरिदशाश्च स वै सर्वमिदं जगथ्स नि नित्र नित्र नित्र नित्र नित्र स्वाम् स्थूत स्वाम् स्था जिज्ञास क्लृप्त ऋतजा रियष्ठा श्रद्धा सत्यो नित्र नित्र नित्र हिस्वान् तपसो परिष्ठाद्, (विरिष्ठाद्) (79.16)

ज्ञात्वा तमेवं मनसा हृदा च भूयो न मृत्यु-मुपयाहि विद्वान् (79.17)

ा । तस्मा—न्न्यास—मेषां तपसा—मतिरिक्तमाहुर्, (79.18)

वसुरण्वो विभूरिस प्राणे त्वमिस सन्धाता ब्रह्मन् त्वमिस वर्माता ब्रह्मन् वर्माता वर्मात

त्वा महस्र, (79.19)

महिमान-मित्युपनिषत् ॥ (79.20)

<u>4.55</u> ज्ञानयज्ञः

T.A.6.80.1

तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः – श्रध्दापत्नी शरीर – मिद्ध्ममुरो

— — — — — — — — — — — — — — विदिर्–लोमानि बर्.हिर्–वेदः – शिखा हृदयं यूपः काम आज्यं

ध्याविध्द्रयते सा दीक्षा यदश्नाति तध्दिवर्-यत्पिबित तदस्य सोमपानं यद्रमते तदुपसदो यथ् संचर-त्युपिवश-त्युत्तिष्ठते च सप्रवर्गी यन्मुखं तदाहवनीयो या व्याहित-गहुतिर्-यदस्य विज्ञानं तज्जुहोति यथ्सायं प्रातरत्ति तथ्समिधं यत्प्रातर् मद्ध्यन्दिन ए सायं च तानि सवनानि ये अहोरात्रे ते दर्ःशपूर्णमासौ येऽर्द्धमासाश्च मासाश्च ते विज्ञानं तज्जुहोति यथ्सार्थं चतुर्मास्यानि य ऋतवस्ते पशुबन्धा ये संवथ्सराश्च परिवथ्सराश्च तेऽहर्गणाः सर्व वेदसं वा एतथ् सत्रं यन्मरणं तदवभृथं एतद्वै जरामर्य-मिनहोत्र ए सत्रं य एवं विज्ञा-नुद्गयने प्रमीयते देवानामेव महिमानं गत्वाऽऽदित्यस्य सायुज्यं

सायुज्य ए सलोकता – माप्नोत्येतौ वै सूर्या चन्द्रमसौर – महिमानौ ब्राह्मणो

गच्छत्यथ यो दक्षिणे प्रमीयते पितृणा-मेव महिमानं गत्वा चन्द्रमसः

तैत्तिरीय आरण्यकं - महानारायणोपनिषत् - TA 6

```
विद्या-निभजयित तस्माद् ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद् ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद् ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद् ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद् ब्रह्मणो महिमान-मित्युपनिषत् ॥ 80.1

सह ना ववतु । सह नौ भुनकु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति महानारायणोपनिषत् समाप्ता
```

Prapaataka Korvai with starting Padams of 1 to 80 Anuvaakams:-(अम्भस्यैकपञ्चाशच्छतं – जातवेदसे चतुर्दश – भूरन्नं – भूरग्नये – भूरग्नये चैकमेकं – पाहि – पाहि चत्वारि चत्वारि – यञ्छन्दसां द्वे – नमो ब्रह्मणे – ऋतं तपो – यथा वृक्षस्यैक मेक – मणोरणीया अतुस्त्रि एशथ् - सहस्रशीष ए षट्वि एशति - रादित्यो वा एष – आदित्यो वै तेज एकमेकःं – निधनपतये त्रयोविञ्ञातिः – सद्योजातं त्रीणि – वामदेवायैक – मघोरेभ्य – स्तत्पुरुषाय द्वे द्वे – ईशानो – नमो हिरण्यबाहव एकमेक – मृत्र सत्यं द्वे – सर्वो वै च त्वारि – कद्रुदाय त्रीणि – यस्य वै कङ्कती – कृणुष्व पाजो – ऽदिति - रापो वा इद्र सर्व मेकमेक - मापः पुनन्तु चत्वा - र्यग्निश्च -सूर्यश्च नवं – नवोमिति चत्वा – र्यायातु पचौ – जोऽसि दशो – त्तमे चत्वारि – घृणिस्त्रीणि – ब्रह्ममेतु मां यास्ते ब्रह्महत्यां द्वादेश – ब्रह्म मेधयाऽद्या न इमं भ्रूषहत्यां – ब्रह्म मेधवा ब्रह्मा देवानामिदं वीरह त्यामेकान्न विं ्राति रेकान्नविं ्रातिर् – मेधा देवी – मेधां म इन्द्रश्चत्वारि चत्वार्या – मां मेधा हे – मयि मेधा मेक– मपैतु – परं – वातं प्राण - ममुत्रभूयाद् - द्धरिष् - शल्कैरिग्नं - मा छिदो मृत्यो -मा नो महान्तं – मानस्तोके – प्रजापते – स्वस्तिदा – त्र्यम्बकं –

तैत्तिरीय आरण्यकं - महानारायणोपनिषत् - TA 6

ये ते सहस्रं हे हे — मृत्यवे स्वाहैकं — देवकृतस्यैकादश् — यह्रो देवाः

— कामोऽकार्षीन् — मन्युरकार्षीद् हे हे — तिलाञ्जुहोमि गावः श्रियं

प्रजाः पञ्च — तिलाः कृण्षाश्चोरस्य श्रीः प्रज्ञातु जातवेदः

सप्त — प्राण वाक् त्वक् छिर उत्तिष्ठ पुरुष पञ्च — पृथिवी शब्द मनो

वाग् व्यक्ताऽऽत्माऽन्तरात्मा परमात्मा मे क्षुधेऽन्नमय

पञ्चदशा — ग्नये स्वाहैकचत्वारिण्श — दो न्तद्ब्रह्म नव —

श्रद्धायां प्राणे निविष्ट श्चतुर्विण्शतिः — श्रद्धायां दशा — ङ्गुष्ठ मात्रः पुरुषो

हे — वाङ्म आसन्नष्टौ — वयः सुपर्षाः — प्राणानां ग्रन्थिरसि हे हे —

नमो रुद्रायैकं — त्वमग्ने द्युभिर् हे — शिवेन मे सन्तिष्ठस्व — सृत्यं —

प्राजापत्य — स्तस्यैव मेक मेक मशतिः)

Korvai with starting Padams of 1, 11, 21 Series of Dasinis : (अम्भस्यपारे – स्वस्ति नः – पाहि नो अग्न एकया – ऽऽदित्यो वा एष —

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

5 <u>अरुणप्रश्नः —तैत्तिरीयारण्यकं</u>
भद्रं कर्णभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गेस्तुष्टुवा ् सस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर् —दधातु ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
1.1.1 <u>अनुवाकं —1</u>
भद्रं कर्णभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः ।

T.A.1.1.2

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च । सह सञ्च-स्करर्खिया ॥ - । । । । । । । । । वाय्वश्चा रिमपतयः । मरीच्यात्मानो अदुहः । देवीर् भुवन सूवरीः ।

```
पुत्रवत्वायं में सुत् ॥ महानाम्नीर्-महामानाः । महस्रो महसः स्वः ।
देवीः पर्जन्य सूवरीः । पुत्रवत्वायं मे सुत ॥ 2 (10)
अपाञ्चुष्णि–मपा रक्षः । अपाञ्चुष्णि–मपा रघं ।
_ ॥ । _ ॥ । _ । । । । । । अपाग्रामप चावर्ति । अप देवीरितो हित ॥ वज्रं देवीरजीता⊌श्च ।
भुवनं देवसूवरीः । आदित्यानदितिं देवीं । योनिनोद्र्ध्व-मुदीषत ॥
शिवा नः शन्तमा भवन्तु । दिव्या आप ओषधयः()।
स्मृडीका सरस्वति । मा ते व्योम सन्दृशि ॥ 3 (12)
(अमुतः – सु – तौषंधयो हे चं ) (A1)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 1 ॥
1.1.2 <u>अनुवाकं – 2</u>
T.A.1.2.1
स्मृतिः प्रत्यक्ष-मैतिह्यं । अनुमान-श्चतुष्टयं । एतैरादित्य मण्डलं ।
सर्वेरेव विधास्यते ॥ सूर्यो मरीचिमादत्ते । सर्वस्माद् भुवनादि ।
तस्याः पाक विशेषेण । स्मृतं काल विशेषणं ॥
नदीव प्रभवात् काचित् । अक्षय्याथ् स्यन्दते यथा । ४ (10)
```

```
T.A.1.2.2
तान्नद्योऽभि संमायन्ति । सोरुः सती न निवर्तते ॥
एवन्नाना संमुत्थानाः । कालाः संम्वथ्सर् श्रिताः ।
अण्राश्च महराश्च । सर्वे समवयन्त्रि तं ॥
स तैः सर्वैः समाविष्टः । ऊरुः सन्न निवर्तते ।
अधिसम्वथ्सरं विद्यात् । तदेव लक्षणे ॥ 5 (10)
T.A.1.2.3
अणुभिश्च महद्भिश्च । समारूढः प्रदृश्यते । सम्वथ्सरः प्रत्यक्षेण ।
नाधिसत्त्वः प्रदृश्यते ॥ पटरो विक्लिधः पिङ्गः ।
एतद् वरुण लक्ष्मणं । यत्रैत-दुपदृश्यते । सहस्रं तत्र नीयते ॥
एक एं हि शिरो नाना मुखे । कृथ्स्नं तदृतु लक्षणं । 6 (10)
T.A.1.2.4
उभयतः सप्तेन्द्रियाणि । जल्पितं त्वेव दिह्यते ॥
शुक्लकृष्णे सम्वथ्सरस्य । दक्षिण वामयोः पार्श्वयोः ।
तस्यैषा भवति ॥ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यत् ।
विषुरूपे अहंनी द्यौरिवासि । विश्वा हि माया अवसि स्वधावः ।
भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्त्वितं ॥
नात्र भुवनं ()। न पूषा। न पशवंः।
```

```
नादित्यः सम्वथ्सर एव प्रत्यक्षेण प्रियतमं विद्यात् ।
एतद्दै सम्वथ्सरस्य प्रियतम् रूपं।
योऽस्य महानर्थ उत्पथ्स्यमानो भवति । इदं पुण्यं कुरुष्वेति ।
तमाहरणं दद्यात् ॥ ७ (17)
(यथा – लक्षण – ऋतुलक्षणं – भुवन् सप्त च (42)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 2 ॥
          <u>अनुवाकं-3</u>
T.A.1.3.1
साकञ्जानार्ं सप्तथमाहु-रेकजं। षडुद्यमा ऋषयो देवजा इति ।
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः । स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः ॥
कोनुं मर्या अमिथितः । सखा सखायमब्रवीत् । जहांको अस्मदीषते ॥
यस्तित्याजं सिखविद्यं सर्खायं । न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति ।
यदी 🤟 शृणोत्यलक 💛 शृणोति । 8 (10)
T.A.1.3.2
न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थामिति ॥ ऋतुर्. ऋतुना नुद्यमानः ।
विननादाभिधावः । षष्टिश्च त्रि एशका वल्गाः ।
शुक्लकृष्णौ च षाष्टिकौ ॥ सारागवस्त्रैर्-जरदंक्षः ।
```

```
वसन्तो वसुभिः सह । सम्वथ्सरस्य सवितुः ।
प्रैषकृत प्रथमः स्मृतः ॥ अमूनादय–तेत्यन्यान् । 9 (10)
T.A.1.3.3
अमू ७ श्च परिरक्षतः । एता वाचः प्रयुज्यन्ते । यत्रै तदुपदृश्यते ॥
एतदेव विजानीयात् । प्रमाणं कालपर्यये । विशेषणं तु वक्ष्यामः ।
ऋतूनां तन्निबोधत ॥ शुक्लवासां रुद्रगणः । ग्रीष्मेणावर्तते सह ।
निजहन् पृथिवी 💇 सर्वां । 10 (10)
T.A.1.3.4
ज्योतिषा ऽप्रतिख्येन सः ॥ विश्वरूपाणि वासा ्सि ।
आदित्यानां निबोधत । सम्वथ्सरीणं कर्मफलं ।
वर्.षाभिर् दंदता ए सह ॥ अदुःखों दुःख चंक्षुरिव ।
तद्मा पीत इव दृश्यते । शीतेना व्यथयन्निव ।
रुरुदक्ष इव दृश्यते ॥ ह्लादयते ज्वलतश्चैव ( ) ।
शाम्यतश्चास्य चक्षुषी । यावै प्रजा भ्रं ७३यन्ते ।
सम्वथ्सराता भ्रं ७३यन्ते ॥ याः प्रतितिष्ठन्ति ।
सँवथ्सरे ताः प्रतितिष्ठन्ति । वर्.षाभ्यं इत्यर्थः ॥ 11 (16)
(शृणो - त्यन्यान्थ् - सर्वा - मेव षट्च) (A3)
```

```
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ ३ ॥
1.1.4
            अनुवाकं – 4
T.A.1.4.1
अक्षिदुःखोत्थितस्यैव । विप्रसन्ने कनीनिके । आङ्के चाद्रणं नास्ति ।
ऋभूणां तन्निबोधत ॥ कनकाभानि वासा ्सि । अहतानि निबोधत ।
अन्नमश्र्नीतं मृज्मीत । अहं वो जीवनप्रदः ॥ एता वाचः प्रयुज्यन्ते ।
शरद्यत्रोप दृश्यते । 12 (10)
T.A.1.4.2
अभिधून्वन्तो-ऽभिघ्नन्त इव । वातवन्तो मरुद्गणाः ॥
अमुतो जेतुमिषुमुखमिव । सन्नब्धाः सह दंदुशे ह ।
अपद्ध्वस्तैर्-वस्तिवर्णेरिव । विशिखासः कपर्दिनः ॥
अकुद्धस्य योथस्यमानस्य । कुद्धस्येव लोहिनी ।
हेमतश्चसूषी विद्यात् । अक्ष्णयोः क्षिपणोरिव ॥ 13 (10)
T.A.1.4.3
दुर्भिक्षं देवलोकेषु । मनूनामुदकं गृहे । एता वाचः प्रवदन्तीः ।
वैद्युतो यान्ति शैशिरीः ॥ ता अग्निः पवमाना अन्वैक्षत ।
इह जीविकाम-परिपश्यन् । तस्यैषा भवति ॥ इहेह वः स्वतपसः ।
मरुतः सूर्यत्वचः । शर्म सप्रथा आवृणे ( ) ॥ 14 (10)
```

```
(द्रश्यत – इवा – वृणे) (४४)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ ४ ॥
          <u>अनुवाकं -5</u>
1.1.5
T.A.1.5.1
अति ताम्राणि वासा एसि । अष्टिवज्रि शतिष्ने च ।
। । । । । । । विश्वे देवा विप्रहरन्ति । अग्निजिह्वा असश्चत ॥ नैव देवो न मर्त्यः ।
न राजा वरुणो विभुः । नाग्निर् नेन्द्रो न पवमानः ।
मातृक्कच्च न विद्यते ॥ दिव्यस्यैका धनुरार्लिः ।
पथिव्यामपरा श्रिता । 15 (10)
T.A.1.5.2
तस्येन्द्रो वम्रिरूपेण । धनुर्ज्या-मछिनथ्स्वयं ॥ तदिन्द्रधनुरित्यज्यं ।
अभ्रवर्णेषु चक्षते । एतदेव राम्योर्-बार्.हस्पत्यस्य ।
एतद् रुद्रस्य धनुः ॥ रुद्रस्य त्वेव धनुर्गार्लिः । शिर उत्पिपेष ।
स प्रवर्गोऽभवत् । तस्माद् यः सप्रवर्गेण यज्ञेन यजते ()।
रुद्रस्य स शिरः प्रतिद्धाति । नैनं ए रुद्र आरुको भवति ।
य एवं वैद ॥ 16 (13) (श्रिता – यजते त्रीणि च) (A5)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 5 ॥
```

1.1.6 <u>अनुवाकं – 6</u>

```
T.A.1.6.1
अत्यूद्ध्विक्षोऽतिरश्चात् । शिशिरः प्रदृश्यते ।
नैव रूपं न वासा ्सि ।
न चक्षुः प्रतिदृश्यते ॥ अन्योन्यं तु न हि ७ स्रातः ।
सत स्तद देवलक्षणं । लोहितोऽक्ष्णि शारशीर्ष्णिः ।
सूर्यस्योदयनं प्रति ॥
त्वं करोषि न्यञ्जलिकां । त्वं करोषि निजानुकां । 17 (10)
T.A.1.6.2
निजानुकामें न्यञ्जलिका । अमी वाच-मुपासतामिति ॥
तस्मै सर्व ऋतवो नमन्ते । मर्यादा करत्वात् प्रपुरोधां ।
ब्राह्मण आप्नोति । य एवं वैद ।
स खलु सम्वथ्सर एतैः सेनानीभिः सह।
इन्द्राय सर्वान्-कामानिभवहति । स द्रफ्सः ।
तस्यैषा भवति ॥ 18 (10)
T.A.1.6.3
अवं द्रफ्सो अर्शुमतीमतिष्ठत् । इयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवर्त-मिन्द्रः शच्या धमन्तं । उपस्नुहि तं नृमणा-मथद्रामिति ॥
```

एतयै वेन्द्रः सला वृक्या सह । असुरान् परिवृश्चति । पृथिव्य ए शुमती । तामन्व-वस्थितः सम्वथ्सरो दिवञ्च । नैवं विदुषा-ऽऽचार्यान् तेवासिनौ । अन्योन्यस्मै द्रह्यातां () । यो द्रह्यति । भ्रश्यते स्वर्गाल् लोकात् । इत्यृतु मण्डलानि । सूर्य मण्डला न्याख्यायिकाः । अत ऊद्र्ध्व ्सिनिर्वचनाः ॥ 19 (15) (निजानुकां – भवति – दुह्यातां पञ्च च) (A6) श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः। 🕉 नमो नारायणाय ॥ ६ ॥ अनुवाकं – 7 T.A.1.7.1 आरोगो भ्राजः पटरः पतङ्गः । स्वर्णरो ज्योतिषीमान्. विभासः । ते अस्मै सर्वे दिवमातपन्ति । ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरन्त इति ॥ कश्यपोऽष्टमः । स महामेरुं न जहाति । तस्यैषा भवति ॥ यते शिल्पं कश्यप रोचनावत् । इन्द्रियावत् पुष्कलं चित्रभानु । यस्मिन् थ्सूर्या अर्पिताः सप्त साकं । 20 (10) T.A.1.7.2 तस्मिन् राजान-मधिविश्रयेममिति ॥ ते अस्मै सर्वे कश्यपा-ज्ज्योतिर्-लभन्ते ।

तान्थ्सोमः कश्यपादधि निर्द्धमित । भ्रस्ता कर्म कृदिवैवं ॥ प्राणो जीवानीन्द्रियं जीवानि । सप्त शीर्.षण्याः प्राणाः । सूर्या इत्याचार्याः ॥ अपश्यमह मेतान्थ् सप्त सूर्यानिति । पञ्चकर्णो वाथ्स्यायनः । सप्तकर्णेश्च प्लाक्षिः । 21 (10) T.A.1.7.3 आनुश्रविक एव नौ कश्यप इति । उभौ वेदयिते । न हि शेकुमिव महामेरुं गन्तुं ॥ अपञ्यमहमेतथ् सूर्यमण्डलं परिवर्तमानं । गार्ग्यः प्राणत्रातः । गच्छन्त महामेरुं । एकञ्चाजहतं ॥ भ्राजपटर पतङ्गा निहने । तिष्ठन्नातपन्ति । तस्मादिह तिप्त्रं तपाः। 22 (10) T.A.1.7.4 अमुत्रेतरे । तस्मादिहा तिन्त्रं तपाः ॥ तेषामेषा भवति ॥ सप्त सूर्या दिव-मनु प्रविष्टाः । तानन्वेति पथिभिर् दक्षिणावान् । ते अस्मै सर्वे घृतमातपन्ति । ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरन्त इति ॥ सप्तर्त्विजः सूर्या इत्याचार्याः ॥ तेषामेषा भवति ॥ सप्त दिशो नाना सूर्याः । 23 (10)

```
T.A.1.7.5
सप्त होतार ऋत्विजः । देवा आदित्या ये सप्त ।
तेभिः सोमाभी रक्षण इति ॥ तदप्याम्नायः । दिग्भ्राज ऋतून् करोति ॥
एतयैवावृता ऽऽसहस्रसूर्यताया इति वैशम्पायनः ॥ तस्यैषा भवति ॥
यद्द्याव इन्द्र ते शत्र शतं भूमीः । उत स्युः ।
न त्वा वजिन्थ् सहस्रण् सूर्याः ( )।24 (10)
T.A.1.7.6
अनु न जातमष्ट रोदसी इति ॥ नाना लिङ्गत्वा-दृतूनां नाना सूर्यत्वं ॥
अष्टौ तु व्यवसिता इति ॥ सूर्यमण्डला-न्यष्टात ऊद्रध्वं ॥
तेषामेषा भवति ॥ चित्रं देवाना-मुदगादनीकं ।
चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आऽप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं ।
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति ॥ 25 (9) (साकं – प्लाक्षि – स्तप्नितपा
- नानासूर्याः - सूर्या - +नवं च) (A7)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ ७ ॥
            <u>अनुवाकं –8</u>
1.1.8
T.A.1.8.1
विश्वते । क्वाय ् सम्वथ्सरो मिथः ।
क्वाहः क्वेयन् देव रात्री । क्व मासा ऋतवः श्रिताः ॥
```

```
अर्द्धमासा मुहूर्ताः । निमेषास्तुटिभिः (निमेषास्त्रुटिभिः) सह ।
क्वेमा आपो निविशन्ते । यदीतो यान्ति संप्रति ॥
काला अफ्सु निविशन्ते । आपः सूर्ये समाहिताः । 26 (10)
T.A.1.8.2
॥ । । । । ।
अभ्राण्यपः प्रपद्यन्ते । विद्युथ्सूर्ये समाहिता ॥ अनवर्णे इमे भूमी ।
इयञ्चासौ च रोदसी ॥ कि ७ स्विदत्रान्तरा भूतं । येनेमे विधृते उभे ।
विष्णुना विधृते भूमी । इति वथ्सस्य वेदना ॥
इरावती धेनुमती हि भूतं। सूयवसिनी मनुषे दशस्ये । 27 (10)
किन्त-द्विष्णो र्बलमाहुः । का दीप्तिः किं परायणं ।
एको यद्धा-रय देवः । रेजती रोदसी उभे ॥ वाताद्विष्णोर् बल माहुः ।
अक्षराद् दीप्ति रुच्यते । त्रिपदान्डारयद् देवः ।
यद्विष्णोरेक-मुत्तमं ॥ 28 (10)
T.A.1.8.4
— । । । । । । अग्नयो वायवश्चैव । एतदस्य परायणं ॥ पृच्छामि त्वा परं मृत्युं ।
अवमं मद्ध्यमञ्चतुं । लोकञ्च पुण्यपापानां ।
```

```
एतत् पृच्छामि संप्रति ॥ अमुमाहुः परं मृत्युं । पवमानं तु मद्ध्यमं ।
अग्निरेवावमो मृत्युः । चन्द्रमा –श्चतुरुच्यते ॥ 29 (10)
T.A.1.8.5
अनाभोगाः परं मृत्युं । पापाः सम्ययन्ति सर्वदा ।
आभोगास्त्वेव सम्यन्ति । यत्र पुण्यकृतो जनाः ॥
ततो मद्ध्यममायन्ति । चतुमग्निञ्च संप्रति ॥
पृच्छामि त्वा पापकृतः । यत्र यातयते यमः ।
त्वन्नस्तद् -ब्रह्मन् प्रब्रूहि । यदि वेत्थाऽसतो गृहान् ॥ 30 (10)
T.A.1.8.6
कश्यपा दुदिताः सूर्याः । पापान्निर्घ्नन्ति सर्वदा ।
रोदस्योरन्तर् देशेषु । तत्र न्यस्यन्ते वासवैः ॥ ते ऽशरीराः प्रपद्यन्ते ।
यथा ऽपुण्यस्य कर्मणः । अपाण्यपाद केशासः ।
तत्र तेंऽयोनिजा जनाः ॥ मृत्वा पुनर्मृत्यु-मापद्यन्ते ।
अद्यमानाः स्वकर्मभिः । 31 (10)
T.A.1.8.7
आशातिकाः क्रिमय इव । ततः पूयन्ते वासवैः ॥
अपैतं मृत्युं जयति । य एवं वैद । स खल्वैवं विद्बाह्मणः ।
दीर्घश्रुत्तमो भवति । कश्यपस्यातिथिः सिद्धगमनः सिद्धागमनः ॥
```

```
ा ।
तस्यैषा भवति ॥ आयस्मिन्–थ्सप्त वासवाः ।
। ।
रोहन्ति पूर्व्या रुहः । 32 (10)
T.A.1.8.8
ऋषिर.ह दीर्घश्रुत्तमः । इन्द्रस्य घर्मो अतिथिरिति ॥
कश्यपः पश्यको भवति । यथ्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात् ॥
अथाग्नेरष्टपुरुषस्य । तस्यैषा भवति ॥
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् ।
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोद्ध्यस्म – ज्जुहुराणमेनः ।
भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेमेति ( ) ॥ 33 (10) समाहिता – दशस्ये –
, , , ,
उत्तम-मुच्यते-गृहान्-थ्स्वकर्मभिः-पूर्व्या रुह-इति) (A8)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ ८ ॥
        <u>अनुवाकं-9</u>
1.1.9
T.A.1.9.1
अग्निश्च जातवेदाश्च । सहोजा अजिराप्रभुः । वैश्वानरो नर्यापाश्च ।
पङ्किराधाश्च सप्तमः । विसर्पे वाष्ट्रमोऽग्नीनां ।
एतेऽष्टौ वसवः क्षिंता इति ॥ यथर्त्वे – वाग्ने – रर्चिर्वर्णं विशेषाः ।
नीलार्चिश्च पीतकार्चिश्चेति ॥
```

```
अथ वायो-रेकादश-पुरुषस्यैकादशंस्त्रीकस्य ॥
प्रभ्राजमाना व्यवदाताः । 34 (10)
T.A.1.9.2
याश्च वासुकि वैद्युताः । रजताः परुषाः ३यामाः ।
कपिला अतिलोहिताः । ऊद्रध्वा अवपतन्ताश्च । वैद्युत इत्येकादश ॥
नैनं वैद्युतों हिनस्ति । य एवं वेद ॥ स होवाच व्यासः पाराशर्यः ।
विद्युद्धधमेवाहं मृत्युमैच्छमिति ॥ न त्वकाम ए हन्ति । 35 (10)
य एवं वैद ॥ अथ गन्धर्वगणाः । स्वान भ्राट् । अङ्घारिर् बंभारिः ।
हस्तः सुहस्तः । कृशानुर् विश्वावसुः । मूद्र्धन्वान्थ्-सूर्यवर्चाः ।
कृतिरित्येकादश गन्धर्वगणाः ॥ देवाश्च महादेवाः ।
रञ्मयश्च देवां गरगिरः ॥ 36 (10)
T.A.1.9.4
नैनं गरों हिनस्ति । य एवं वैद ॥ गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती ।
एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । अष्टापदी नवपदी बभूवुषी ।
सहस्राक्षरा परमे व्योमन्निति ॥ वाचो विशेषणं ॥
अथ निगदव्याख्याताः । ताननुक्रमिष्यामः ॥
वराहवः – स्वतपसः । 37 (10)
```

```
T.A.1.9.5
विद्युन् महस्रो धूपयः । श्वापयो गृहमेधाश्चेत्येते ।
ये चेमेऽशिमिविद्विषः ॥ पर्जन्याः सप्त पृथिवीमभिवर्.षन्ति ।
वृष्टिभिरिति । एतयैव विभक्ति विपरीताः । सप्तभिर्वातै रुदीरिताः ।
अमूं ँलोका-नभिवर्.षन्ति । तेषामेषा भवति ॥
समान-मेतदुदकं । 38 (10)
T.A.1.9.6
उच्चैत्यव चाहभिः। भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति।
दिवं जिन्वन् –त्यग्नय इति ॥ यदक्षरं भूतकृतं । विश्वे देवा उपासते ।
महर्.षिमस्य गोप्तारं । जमदग्नि-मकुर्वत ॥ जमदग्नि-राप्यायते ।
छन्दोभि-श्रतुरुत्तरैः । राज्ञः सोमस्य तृप्तासः । 39 (10)
<u>T.A.1.9.7</u>
। । । । । । । । । । वहाँ प्रदिशो विशः ॥ तच्छँ य्योरा वृणीमहे ।
गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवी स्वस्तिरस्तु नः ।
स्वस्तिर् मानुषेभ्यः । ऊद्ध्वं जिगातु भेषजं ।
रान्नो अस्तु द्विपदे । राञ्चतुष्पदे ( ) ॥
सोमपा(3) असोमपा(3) इति निगदव्याख्याताः ॥ 40 (11) (व्यवदाता –
हन्ति-गरगिर - स्तपस - उदकं - तृप्तास - श्वतुष्पद एकं च) (A9)
```

```
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ ९ ॥
            <u>अनुवाकं -10</u>
1.1.10
T.A.1.10.1
सहस्रवृदियं भूमिः । परं ँव्योम सहस्रवृत् ।
अश्विना भुज्यू नासत्या । विश्वस्य जगतस्पती ॥
जाया भूमिः पतिर्व्योम । मिथुनन्ता अतुर्यथुः ।
पुत्रो बृहस्पती रुद्रः । सरमा इति स्त्रीपुमं ॥
श्कं वामन्यद्यजतं वामन्यत् । विषुरूपे अहंनी द्यौरिव स्थः । 41 (10)
T.A.1.10.2
विश्वा हि माया अवथः स्वधावन्तौ । भद्रा वां पूषणाविह रातिरस्तु ॥
वासात्यौ चित्रौ जगतो निधानौ । द्यावाभूमी चरथः सर् सखायौ ।
ताविश्वना रासभाश्वा हवं मे । शुभस्पती आगतर्ं सूर्यया सह ॥
त्युग्रो ह भुज्यु-मिश्वनोद मेघे। रियन्न किश्वन् ममृवाँ(2) अवाहाः।
तमूहथुर्-नौभिरात्मन्-वतीभिः।
अन्तरिक्ष प्रुड्भिर-पोदकाभिः ॥ 42 (10)
T.A.1.10.3
। । । । । । । । । तस्यः क्षपस्त्रिरहा ऽतिव्रजब्धिः । नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः ।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे । त्रिभी रथैः शतपद्धिः षडश्वैः ॥
```

सवितारं वितन्वन्तं । अनुबद्ध्नाति शांबरः । आपपूर्.षं-बरश्चैव । सविता ऽरेपसो ऽभवत् ॥ त्य ए सुतृप्तं वैदित्वैव । बहुसोम गिरंँवशी । **43 (10)** T.A.1.10.4 अन्वेति तुग्रो विक्रयान्तं । आयसूयान्थ् सोमतृपसुषु ॥ स सङ्ग्राम-स्तमीद्योऽत्योतः । वाचो गाः पिपाति तत् । स तद्गोभिः स्तवा ऽत्येत्यन्ये । रक्षसा ऽनन्विताश्च ये ॥ अन्वेति परिवृत्त्याऽस्तः । एवमेतौ स्थों अश्विना । ते एते द्युः पृथिव्योः । अहरहर्-गर्भन्दधाथे ॥ 44 (10) T.A.1.10.5 तयो रेतौ वथ्सा वहोरात्रे । पृथिव्या अहः । दिवो रात्रिः । ता अविसृष्टौ । दंपती एव भवतः ॥ तयो रेतौ वथ्सौ । अग्निश्चा-दित्यश्च । रात्रेर्वथ्सः । श्वेत आंदित्यः । अह्रोऽग्निः । 45 (10) T.A.1.10.6 ताम्रो अरुणः । ता अविसृष्टौ । दम्पती एव भवतः ॥ तयो रेतौ वथ्सौ । वृत्रश्च वैद्युतश्च । अग्नेर्वृत्रः । वैद्युत आदित्यस्य । ता अविसृष्टौ । दम्पती एव भवतः ॥ तयो रेतौ वथ्सौ । 46 (10)

```
T.A.1.10.7
उष्मा च नीहारश्च । वृत्रस्योष्मा । वैद्युतस्य नीहारः ।
तौ तावेव प्रतिपद्येते ॥ सेय एं रात्री गर्भिणी पुत्रेण सम्वसति ।
तस्या वा एतदुल्बणं । यद्रात्रौ रञ्मयः । यथा गोर्गर्भिण्या उल्बणं ।
एवमेतस्या उल्बणं ॥ प्रजयिष्णुः प्रजया च पशुभिश्च भवति ( ) ।
य एवं वैद । एतमुद्यन्त-मिपयन्तञ्चेति । आदित्यः पुण्यस्य वथ्सः ।
अथ पवित्राङ्गिरसः ॥ ४७ (१४) (स्थो - ऽपोदकाभिर् - वशी - दधाथे -
अग्नि – स्तयो रेतौ वथ्सौ – भवति चत्वारि च) (A10)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः ।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 10 ॥
           <u>अनुवाकं –11</u>
T.A.1.11.1
पवित्रवन्तः परिवाजमासते । पितैषां प्रत्नो अभिरक्षति व्रतं ।
पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते । प्रभुगित्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर् न तदामो अञ्नुते । श्रृतास इद्वहन् – तस्तथ् समाञ्चत ॥
<mark>"ब्रह्मा देवानां{1}"</mark> ॥ असतः सद्ये ततक्षुः । 48 (10)
```

```
<u>T.A.1.11.2</u>
ऋषयः सप्तात्रिश्च यत् । सर्वेऽत्रयो अगस्त्यश्च ।
नक्षत्रैः राङ्कतो ऽवसन्न् ॥ अथं सवितुः रयावाश्वस्या ऽवर्त्तिकामस्य ॥
अमी य ऋक्षा निहिंता स उच्चा । नक्तं ददृश्रे कुहंचिद्दिवेयुः ।
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि । विचाकश-च्चन्द्रमा नक्षत्रमेति ॥
तथ् सवितुर् वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि । 49 (10)
T.A.1.11.3
चियो यो नः प्रचोदयात् ॥ तथ्सवितुर् वृणीमहे ।
वयं देवस्य भोजनं । श्रेष्ठ एं सर्वधातमं । तुरं भगस्य धीमहि ॥
अपागूहत सविता तृभीन् । सर्वान् दिवो अन्धसः ।
नक्तन्तान्यभवन् दृशे । अस्थ्यस्थ्ना संभविष्यामः ॥
नाम नामैव नाम में 150 (10)
T.A.1.11.4
नपुर्ंसकं पुमा ७ स्त्र्यंस्मि । स्थावरोऽस्म्यथ जङ्गमः ।
यजेऽयक्षि यष्टाहे च ॥ मया भूतान्ययक्षत । पशवो मम भूतानि ।
अनुबन्ध्यो ऽस्म्यहं विभुः ॥
स्त्रियः सतीः । ता उ मे पुर्स आहुः । पश्यदक्षण्वात्र-विचेतदन्धः ।
कविर्यः पुत्रः स इमा चिकेत । 51 (10)
```

T.A.1.11.5 यस्ता विजानाथ् संवितुः पिताऽसत् ॥ अन्धो मणिमविन्दत् । तमनङ्गलि-रावयत् । अग्रीवः प्रत्यमुञ्चत् । तमजिह्वा असश्चत ॥ ऊद्र्ध्वमूल-मवाक्छाखं। वृक्षं यो वेद संप्रति। न स जातु जनः श्रद्दध्यात् । मृत्युर्मा मारयादितिः ॥ हिसत्रं रुदितङ्गीतं । 52 (10) T.A.1.11.6 वीणां पण वलासितं । मृतञ्जीवञ्च यत्किञ्चित् । अङ्गानि स्नेव विद्धि तत् ॥ अतृष्य ७ स्तृष्य ध्यायत् । अस्माज्जाता में मिथू चरत्रं । पुत्रो निर्.ऋत्या वैदेहः । अचेता यश्च चेतनः ॥ स तं मणिमविन्दत् । सोऽनङ्गलिरावयत् । सोऽग्रीवः प्रत्यमुन्चत् । 53 (10) T.A.1.11.7 सोऽजिह्नो असश्चत ॥ नैतमृषिं विदित्वा नगरं प्रविशेत् । यदि प्रविशेत् । मिथौ चरित्वा प्रविशेत् । तथ्संभवस्य व्रतं ॥ आ तमग्ने रथन्तिष्ठ । एकाश्वमेक योजनं । एकचक्र–मेकधुरं । वात धांजि गतिं विभो ॥ न रिष्यति न व्यथते () । 54 (10)

```
T.A.1.11.8
नास्याक्षो यातु सज्जिति । यच्छ्वेतान् रोहिता ७ श्चारनेः ।
रथे युक्त्वाऽधितिष्ठति ॥ एकया च दशभिश्च स्वभूते ।
द्वाभ्या मिष्टये विज्ञात्या च । तिसृभिश्च वहसे त्रिज्ञाता च ।
नियुद्धिर्-वायविह ता विमुञ्च ॥ 55 (7)
(ततक्षुर् – धीमिह – नाम में – चिकेत – गीतं – प्रत्यमुञ्चद् –
व्यथते – +सप्त चं) (A11)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 11 ॥
1.1.12
         <u>अनुवाकं –12</u>
T.A.1.12.1
ा । । ।
आतनुष्व प्रतनुष्व । उद्धमाधम सन्धम । आदित्ये चन्द्रवर्णानां ।
्रा प्रमान् ॥ इतः सिक्त स्र्यगतं । चन्द्रमसे रसङ्कृधि ।
वारादं जनया-ग्रेऽग्निं। य एको रुद्र उच्यते॥
असं ख्याताः सहस्राणि । स्मर्यते न च दृश्यते । 56 (10)
T.A.1.12.2
एवमेतन्निबोधत ॥ आ मन्द्रै-रिन्द्र हरिभिः । या हि मयूर-रोमभिः ।
मात्वा केचिन्निये मुरिन्न पाशिनः । दधन्वेव ता इहि ॥
मा मन्द्रै-रिन्द्र हरिभिः। यामि मयूरं रोमभिः।
```

```
मा मा केचिन्निये मुरिन्न पाशिनः । निधन्वेव ताँ(2) इमि ॥
अण्भिश्च महद्भिश्च । 57 (10)
T.A.1.12.3
निघृष्वै रसमायुतैः । कालैर्. हरित्वमापन्नैः । इन्द्रायाहि सहस्र युक् ॥
अग्निर् विभ्राष्टिं वसनः । वायुः श्वेतसिकद्रकः ।
सम्वथ्सरो विषू वर्णैः । नित्यास्ते ऽनुचरास्तव ॥
स्ब्रह्मण्यो ए स्ब्रह्मण्यो ए स्ब्रह्मण्यों।
इन्द्रागच्छ हरिव आगच्छ मेधातिथेः । मेष वृषणश्चस्य मेने । 58 (10)
T.A.1.12.4
गौरावस्कन्दिन्न-हल्यायै जार । कौशिक-ब्राह्मण गौतमंबुवाण ॥
अरुणाश्चा इहागताः । वसवः पृथिवि क्षितः ।
अष्टौ दिग्वाससो ऽग्नयः । अग्निश्च जातवेदाश्चेत्येते ॥
ताम्राश्वा–स्ताम्ररथाः । ताम्रवर्णा स्तथाऽसिताः ।
दण्डहस्ताः खादग्दतः । इतो रुद्राः पराङ्गताः । 59 (10)
T.A.1.12.5
उक्त⊌ स्थानं प्रमाणञ्चं पुर इत ॥ बृहस्पतिश्च सविता च ।
विश्वरूपै–रिहागतां । रथेनोदकवर्त्मना । अफ्सुषा इति तद्द्वयोः ॥
उक्तो वेषो वासा ्सि च । कालावयवाना – मितः प्रतीज्या ।
```

```
वासात्यां इत्यश्चिनोः । कोऽन्तरिक्षे शब्दङ्करोतीति ।
वासिष्ठो रौहिणो मीमा एंसां चक्रे ()। तस्यैषा भवति॥
"वाश्रेव विद्यु{2}" दिति ॥ ब्रह्मण उदरणमसि । ब्रह्मण उदीरणमसि ।
ब्रह्मण आस्तरणमसि । ब्रह्मण उपस्तरणमसि ॥ 60 (16)
(दुश्यते - च - मेने - परां गता - श्रक्रे षट् च) (A12)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 12 ॥
             <u>अनुवाकं –13</u>
T.A.1.13.1 [अपक्रामत गर्भिण्यः ]
अष्टयोनी-मष्टपुत्रां । अष्टपत्नी-मिमां महीं । अहं वैद न मे मृत्युः ।
न चामृत्युरघाहरत् ॥ अष्टयोन्यष्ट पुत्रं । अष्टपदिद-मन्तरिक्षं ।
अहं वैद न में मृत्युः । न चामृत्युरघाहरत् ।
अष्टयोनी-मष्टपुत्रां । अष्टपत्नी-ममुन्दिवं । 61 (10)
T.A.1.13.2
अहं वैद न में मृत्युः । न चामृत्युरघाहरत् ॥
"सुत्रामाणं{3}" "महीमूषु"{4} ॥ अदितिद्यौ-रदिति-रन्तरिक्षं ।
अदिति र्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जनाः ।
अदितिर्-जात-मदितिर्-जनित्वं ॥
```

```
अष्टौ पुत्रासो अदितेः ।
ये जाता स्तन्वः परि । देवाँ (2) उपप्रैथ् सप्तभिः । 62 (10)
T.A.1.13.3
परा मार्ताण्डमास्यत् ॥ सप्तभिः पुत्रै-रदितिः । उप प्रैत् पूर्व्यं युगं ।
प्रजायै मृत्यवे तत् । परा मार्ताण्ड-माभरदिति ॥ ताननुक्रमिष्यामः ॥
मित्रश्च वरुणश्च । धाता चार्यमा च । अप्राश्च भगश्च ।
इन्द्रश्च विवस्वा ७ श्वेत्येते () ॥
"हिरण्यगर्भो {5}" "ह ्सःशुचिषत् {6}"।
"ब्रह्म जज्ञानं{7}" "तदित् पद{8}" मिति ॥
गर्भः प्राजापत्यः । अथ पुरुषः सप्तपुरुषः ॥ 63 (14)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 13 ॥
            <u>अनुवाकं –14</u>
1.1.14
[ यथास्थानं गर्भिण्यः ]
T.A.1.14.1
योऽसौ तपत्रुदेति । स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेति ।
मा मे प्रजाया मा पशूनां। मा मम प्राणानादायोदगाः॥
```

असौ यो उस्तमेति । स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायास्तमेति । मा में प्रजाया मा पंशूनां । मा मम प्राणानादाया स्तङ्गाः ॥ T.A.1.14.2 मा मे प्रजाया मा पशूनां । मा मम प्राणै-रापूरिष्ठाः ॥ असौ योऽपक्षीयति । स सर्वेषां भूतानां प्राणै-रपक्षीयति । मा में प्रजाया मा पंशूनां। मा मम प्राणै-रपक्षेष्ठाः ॥ अमूनि नक्षत्राणि । सर्वेषां भूतानां प्राणैरपं प्रसर्पन्ति चोथ्सर्पन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनां। मा मम प्राणैरप प्रसृपत मोथ्सृपत ॥ 65 (10) T.A.1.14.3 इमे मासा-श्राद्धमासाश्च । सर्वेषां भूतानां प्राणैरप प्रसर्पन्ति चोथ्सर्पन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनां। मा मम प्राणैरप प्रसृपत मोथ्सृपत । इम ऋतवः । सर्वेषां भूतानां प्राणैरपं प्रसर्पन्ति चोथ्सर्पन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनां।

मा मम प्राणैरप प्रसृपत मोथ्सृपत ॥ अय् संम्वथ्सरः । सर्वेषां भूतानां प्राणैरपं प्रसर्पति चोथ्संपति च । 66 (10) T.A.1.14.4 मा में प्रजाया मा पंशूनां। मा मम प्राणैरप प्रसृप मोथ्सृप॥ इदमहः । सर्वेषां भूतानां प्राणै-रप प्रसर्पति चोथ्सर्पति च । मा मे प्रजाया मा पशूनां। मा मम प्राणैरप प्रसृप मोथ्सृप। इय ए रात्रिः । सर्वेषां भूतानां प्राणै-रप प्रसर्पति चोथ्सर्पति च । मा मे प्रजाया मा पशूनां। मा मम प्राणैरप प्रसृप मोथ्सृप ()॥ 30 भूर्भुवस्स्वः ॥ एतद्वो मिथुनं मा नो मिथुनं ए रीढ्वं ॥ 67 (12) (प्राणैरापूर्यति–मोथ्सृपत–चोथ्सर्पति च – मोथ्सृप द्वे च) (A14) श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः। 🕉 नमो नारायणाय ॥ 14 ॥

Special Korvai

(योसौ षोडशामूनि द्वादशायं चतुर्दश)

ा ा ।

(उदेत्यस्तमेत्यापूर्यत्यपक्षीयत्यमूनि नक्षत्राणी मे मासा इम

ा ा ।

ऋतवोऽय

सम्वथ्सर इदमहरिय

रात्रिर्दश)

अनुवाकं-15 1.1.15 T.A.1.15.1 अथादित्यस्याष्ट पुरुषस्य ॥ वसूना मादित्याना स्थाने स्वते जसा भानि ॥ रुद्राणा-मादित्याना ७ स्थाने स्वते जसा भानि ॥ आदित्याना-मादित्याना स्थाने स्वते जसा भानि ॥ सता एसत्यानां । आदित्याना ७ स्थाने स्वते जसा भानि ॥ अभिधून्वता – मभिघ्नतां । वातवंतां मरुतां । आदित्याना ७ स्थाने स्वते जसा भानि ॥ ऋभूणा–मादित्याना स्थाने स्वते जसा भानि () ॥ विश्वेषां देवानां । आदित्याना ७ स्थाने स्वते जसा भानि ॥ सम्वथ्सरस्य सवितुः । आदित्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ॥ ॐ भूर्भुवस्स्वः । रञ्मयो वो मिथुनं मा नो मिथुनं ए रीढ्वं ॥ 68 (16) (ऋभूणामादित्याना ७ स्थाने स्वते जसा भानि षट्च) (A15) श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः। 🕉 नमो नारायणाय ॥ 15 ॥ 1.1.16 <u>अनुवाकं – 16</u> T.A.1.16.1 आरोगस्य स्थाने स्वतेजसा भानि । भ्राजस्य स्थाने स्वतेजसा भानि । पटरस्य स्थाने स्वतेजसा भानि । पतङ्गस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।

Page 122 of 161

```
स्वर्णरस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
ज्योतिषीमतस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
विभासस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
कश्यपस्य स्थाने स्वतेजसा भानि । ॐ भूर्भुवस्स्वः ।
आपो वो मिथुनं मा नो मिथुन ए रीढ्वं ॥ 69 (10)
(आरोगस्य दश) (A16)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 16 ॥
            <u>अनुवाकं –17</u>
1.1.17
T.A.1.17.1
अथ वायो-रेकादश-पुरुषस्यैकादश-स्त्रीकस्य ॥
प्रभाजमानाना ं रुद्राणा ७ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
व्यवदाताना 🦭 रुद्राणा 🐸 स्थाने स्वते जसा भानि ।
वासुकिवैद्युताना 🤯 रुद्राणा 🐸 स्थाने स्वते जसा भानि ।
रजताना 🤟 रुद्राणा 🐸 स्थाने स्वते जसा भानि ।
परुषाणा ं रुद्राणा ७ स्थाने स्वते जसा भानि ।
इयामाना ं रुद्राणा ७ स्थाने स्वते जसा भानि ।
कपिलाना 💇 रुद्राणा 🛩 स्थाने स्वते जसा भानि ।
```

अतिलोहिताना 🦭 रुद्राणा 🛩 स्थाने स्वते जसा भानि । ऊद्रध्वाना ७ रुद्राणा ७ स्थाने स्वते जसा भानि । 70 (10) T.A.1.17.2 अवपतन्ताना ुं रुद्राणा ७ स्थाने स्वते जसा भानि । वैद्युताना 🗸 रुद्राणा 🛩 स्थाने स्वते जसा भानि । प्रभाजमानीना एं रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । व्यवदातीना 💇 रुद्राणीना 🐸 स्थाने स्वते जसा भानि । वासुकिवैद्युतीना एं रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । रजताना 🦭 रुद्राणीना 🗵 स्थाने स्वते जसा भानि । परुषाणा एं रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । रुयामाना • रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । कपिलाना 💇 रुद्राणीना 🗢 स्थाने स्वते जसा भानि । अतिलोहितीना 🤟 रुद्राणीना 🗵 स्थाने स्वते जसा भानि ()। ऊद्रध्वाना ् रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । अवपतन्तीना एं रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । वैद्युतीना ं रुद्राणीना ७ स्थाने स्वते जसा भानि । ॐ भूर्भुवस्स्वः।

```
रूपाणि वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीढ्वं ॥ 71 (15)
(ऊद्रध्वीनाण् रुद्राणाः स्थाने स्वतेजसा भा – न्यतिलोहितीनाण्
,
रुद्राणीना७ स्थाने स्वतेजसा भानि पञ्च च (A17)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 17 ॥
        <u>अनुवाकं –18</u>
1.1.18
T.A.1.18.1
अथाग्नेरष्ट पुरुषस्य ॥ अग्नेः पूर्व-दिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
जातवेदस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
सहोजसो दक्षिण-दिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
अजिराप्रभव उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
वैश्वानरस्यापरदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
नर्यापस उपदिञ्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
पङ्क्तिराधस उदग्दिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
विसर्पिण उपदिञ्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि ।
ॐ भूर्भुवस्स्वः()।
दिशो वो मिथुनं मा नो मिथुन ए रीढ्वं ॥ 72 (11)
(स्वरेकम् च) (A18)
```

श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः । ॐ नमॊ नारायणाय ॥ 18 ॥

```
Special Korvai
(एतद् ररमय आपो रूपाणि दिशः पञ्च)
            <u>अनुवाकं -19</u>
1.1.19
T.A.1.19.1
दक्षिणपूर्व-स्यान्दिशि विसर्पी नरकः । तस्मान्नः परिपाहि ॥
दक्षिणा-परस्या-न्दिश्य विसर्पी नरकः । तस्मान्नः परिपाहि ॥
उत्तर-पूर्वस्या-न्दिशि विषादी नरकः । तस्मान्नः परिपाहि ॥
उत्तरा-परस्या-न्दिश्य विषादी नरकः । तस्मान्नः परिपाहि ॥
"<mark>आ यस्मिन्थ्सप्त वासवा{9}" "इन्द्रियाणि रातक्रत{10}"</mark>
वित्येते ॥ ७३ (९) (दक्षिणपूर्वस्याम् नव) (A19)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 19 ॥
1.1.20 <u>अनुवाकं – 20</u>
T.A.1.20.1
इन्द्र घोषा वो वसुभिः पुरस्ता-दुपदधतां।
मनोजवसो वः पितृभिर् दक्षिणत उपदधतां।
प्रचेता वो रुद्रैः पश्चा-दुपद्धतां ।
विश्वकर्मा व आदित्यै-रुत्तरत उपद्यतां।
```

```
त्वष्टां वो रूपै-रुपरिष्टा-दूपद्धतां । संज्ञानं वः पश्चादिति ॥
आदित्यः सर्वोऽग्निः पृथिव्यां । वायुरन्तरिक्षे । सूर्यो दिवि ।
चन्द्रमा दिक्षु ()। नक्षत्राणि स्वलोके ॥ एवा ह्येव । एवा ह्यंग्ने ।
एवा हि वायो । एवा हींन्द्र । एवा हि पूषन्न ।
एवा हि देवाः ॥ 74 (17) दिक्षु सप्त च) (A20)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 21 ॥
           <u>अनुवाकं-21</u>
1.1.21
T.A.1.21.1
ाः
आपमापामपः सर्वाः । अस्मा–दस्मादितोऽमुतः ।
अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च । सह सञ्चस्करर्खिया ॥ वाय्वश्वा रिम पतयः ।
मरींच्यात्मानो अद्रहः । देवी र्भुवन सूवरीः । पुत्रवत्त्वायं मे सुत ॥
महानाम्नीर-महामानाः । महस्रो महस्रस्यः । 75 (10)
T.A.1.21.2
देवीः पर्जन्य सूवरीः । पुत्रवत्त्वाय मे सुत ॥
अपाञ्चं ष्णि–मपा रक्षः । अपाञ्चं ष्णि–मपा रघं ।
ा । । । । अप देवीरितो हित ॥ वज्रं देवीरजीता७श्च ।
```

```
भुवनं देव सूवरीः । आदित्यानदितिं देवीं ।
योनिनोद्र्ध्व-मुदीषत ॥ 76 (10)
T.A.1.21.3
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्-यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवाण् सस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्–दधात् ॥
केतवो अरुणासश्च । ऋषयो वातरशनाः() । प्रतिष्ठा ् शतथा हि ।
समाहितासो सहस्रधायसं ॥ शिवा नः शन्तमा भवन्तु ।
दिव्या आप ओषधयः ॥ सुमृडीका सरस्वति ।
माते व्योम सन्द्रिश ॥ 77 (16)
(स्व - रुदीषत - वातरशनाः षट्च) (A21)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 21 ॥
         <u>अनुवाकं-22</u>
1.1.22
T.A.1.22.1
योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पं । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
```

```
य एवं वैद ॥ योऽपामायतनं वैद । आयतनवान् भवति ।
अग्निर्वा अपामायतनं । आयतनवान् भवति ।
ा ।
योऽग्नेरायतनं वैद । 78 (10)
T.A.1.22.2
आयतनवान् भवति । आपो वा अग्नेरायतनं । आयतनवान् भवति ।
य एवं वैद ॥ योऽपामायतनं वैद । आयतनवान् भवति ।
वायुर्वा अपामायतनं । आयतनवान् भवति । यो वायोरायतनं वैद ।
आयतनवान् भवति । 79 (10)
T.A.1.22.3
अापो वै वायोरायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वैद ॥
ा । । । । । । । । आयतनवान् भवति । योऽमुष्य–तपत आयतनं वैद ।
आयतनवान् भवति । आपोवा अमुष्य-तपत आयतनं । 80 (10)
T.A.1.22.4
आयतनवान् भवति । य एवं वैद ॥ योऽपामायतनं वैद ।
आयतनवान् भवति । चन्द्रमा वा अपामायतनं । आयतनवान् भवति ।
यश्चन्द्रमस आयतनं वैद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै चन्द्रमस आयतनं । आयतनवान् भवति । 81 (10)
```

```
T.A.1.22.5
य एवं वैद ॥ योऽपामायतनं वैद । आयतनवान् भवति ।
नक्षत्राणि वा अपामायतनं । आयतनवान् भवति ।
यो नक्षत्राणा-मायतनं वैद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै नक्षत्राणा-मायतनं । आयतनवान् भवति ।
य एवं वैद ॥ 82 (10)
ा ।
योऽपामायतनं वैद । आयतनवान् भवति । पर्जन्यो वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यः पर्जन्य-स्यायतनं वैद ।
आयतनवान् भवति । आपो वै पर्जन्य-स्यायतनं ।
आयतनवान् भवति । य एवं वैद ॥ योऽपामायतनं वैद ॥ 83 (10)
T.A.1.22.7
आयतनवान् भवति । सम्वथ्सरो वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यः सम्वथ्सर–स्यायतनं वैदं ।
आयतनवान् भवति । आपो वै सम्वथ्सर-स्यायतनं ।
आयतनवान् भवति । य एवं वैद ॥
॥
योऽफ्स् नावं प्रतिष्ठितां वैद । प्रत्येव तिष्ठति । 84 (10)
```

```
T.A.1.22.8
इमे वै लोका अफ्सु प्रतिष्ठिताः । तदेषाऽभ्यनूका ॥
अपाण् रसमुदयण्सन्न् । सूर्ये शुक्रण् समाभृतं ।
अपा ्रसंस्य यो रसः । तं वो गृह्णा-म्युत्तममिति ॥
इमे वै लोका अपार् रसः । तेऽमुष्मिन्-नादित्ये समाभृताः ॥
जानुदघ्नी-मुत्तर-वेदीङ्खात्वा । अपां पूरियत्वा गुल्फदघ्नं । 85 (10)
T.A.1.22.9
पुष्करपर्णैः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्च स स्तीर्य । तस्मिन् विहायसे ।
अग्निं प्रणीयोप-समाधायं ॥ ब्रह्मवादिनों वदन्ति ।
कस्मात् प्रणीतेऽय-मग्निश्चीयते । साप्प्रणीतेऽयमफ्सु ह्ययञ्चीयते ।
असौ भुवनेऽप्य-नाहिताग्नि-रेताः।
तमभितं एता अभीष्टका उपद्याति ॥
अग्निहोत्रे दर्.शपूर्ण-मासयोः ।
पशुबन्धे चातुर्मास्येषु । 86 (10)
T.A.1.22.10
अथो आहुः । सर्वेषु यज्ञक्रतुष्विति ॥ एतद्ध स्म वा आहुः राण्डिलाः ।
कमग्निञ्चनुते ॥ सन्निय-मग्निञ्चन्वानः ।
सम्वथ्सरं प्रत्यक्षेण ॥ कमग्निञ्चिनुते ।
```

```
सावित्र-मग्निञ्चिन्वानः ।
अमुमादित्यं प्रत्यक्षेण ॥ कमग्निञ्चिनुते । 87 (10)
T.A.1.22.11
नाचिकेत-मग्निञ्चिन्वानः । प्राणान् प्रत्यक्षेण ॥ कमग्निञ्चनुते ।
चातुर्.होत्रिय-मग्निञ्चिन्वानः । ब्रह्म प्रत्यक्षेण ॥ कमग्निञ्चनुते ।
वैश्वसृज-मग्निञ्चिन्वानः । शरीरं प्रत्यक्षेण ॥ कमग्निञ्चनुते ।
उपानुवाक्यमाश्रू-मग्निञ्चिन्वानः । 88 (10)
T.A.1.22.12
इमान् ँलोकान् प्रत्यक्षेण ॥ कमग्निञ्चिनुते ।
इममारुण-केतुक-मग्निञ्चिन्वान इति । य एवासौ ।
इतश्चा-मुतश्चा-व्यतीपाती । तमिति ॥ योऽग्नेर्मिथूया वेद ।
मिथुनवान् भवति । आपो वा अग्नेर्मिथूयाः ।
मिथुनवान् भवति ()। य एवं वैद ॥ 89 (11)
(वेद – भव – त्यायतनं – भवति – वेद – वेद – तिष्ठति –
गुल्फदघ्नं – चातुर्मास्ये – ष्वमुमादित्यं प्रत्यक्षेण कमग्निं चिनुत –
उपानुवाक्यमाशुमग्निं चिन्वानो – मिथूया मिथुनवान्
भवत्येकं च) (A22)श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण
स्वामिने नमः । ॐ नमॊ नारायणाय ॥ 22 ॥
```

आपो वा इदमासन्थ् सिल्लमेव।
स प्रजापतिरेकः पुष्करपणे समभवत्।
तस्यान्तर् मनिस कामः समवर्तत। इदण् सृजेयिमिति।
तस्माद्यत् पुरुषो मनसाऽभिगच्छति। तद्वाचा वदति।
तत्कर्मणा करोति। तदेषा ऽभ्यनूक्ता॥ कामस्तदग्रे समवर्तताधि।
मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्। 90 (10)

Т.А.1.23.2
सतो बन्धुमसिति निरिविन्दञ् । हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषेति ॥
उपैनन्तदुपनमित । यत् कामो भवित । य एवं वैद ॥ स तपोऽतप्यत ।
स तपस्तप्त्वा । शरीरमधूनुत । तस्य यन् मा ्समासीत् ।
ततोऽरुणाः केतवो वातरशना ऋषय उदितिष्ठञ् । 91 (10)

```
T.A.1.23.3
ये नखाः । ते वैखानसाः । ये वालाः । ते वालखिल्याः । यो रसः ।
सोऽपां ॥ अन्तरतः कूर्मं भूत्र सर्पन्तं । तमब्रवीत् ।
मम वै त्वङ्-मां एसा । समभूत् । 92 (10)
T.A.1.23.4
नेत्यं ब्रवीत् । पूर्वमेवाह-मिहासमिति । तत्पुरुषस्य पुरुषत्वं ।
स सहस्रेशीर्.षा पुरुषः । सहस्राक्षः सहस्रेपात् ।
भूत्वोदितिष्ठत् । तमब्रवीत् । त्वं वै पूर्व ए समभूः ।
त्वमिदं पूर्वः कुरुष्वेति ॥ स इत आदायापः । 93 (10)
T.A.1.23.5
अञ्जलिना पुरस्ता-दुपादधात् । एवा होवेति ।
ततं आदित्य उदितिष्ठत् । सा प्राची दिक् ॥
अथारुणः केतुर्-दक्षिणत उपादधात् । एवा ह्यग्न इति ।
ततो वा अग्निरुदितष्ठत्। सा दक्षिणा दिक्।
अथारुणः केतुः पश्चादुपादधात् ।
एवा हि वायो इति । 94 (10)
T.A.1.23.6
ततो वायुरुदतिष्ठत् । सा प्रतीची दिक् ।
अथारुणः केतु-रुत्तरत उपादधात् । एवा हीन्द्रेति ।
```

```
ततो वा इन्द्र उदितिष्ठत् । सोदींची दिक् ।
अथारुणः केतुर्-मद्ध्यं उपादंधात् । एवा हि पूषन्निति ।
ततो वै पूषोदितिष्ठत् । सेयन्दिक् । 95 (10)
T.A.1.23.7
अथारुणः केतुरुपरिष्टा-दुपादधात् । एवा हि देवा इति ।
ततो देव मनुष्याः पितरः । गन्धर्वा-फ्सरस श्लोद-तिष्ठन्न् ।
सोद्र्ध्वा दिक् ॥ या विप्रुषो विपरापतन्न् ।
ताभ्योऽसुरा रक्षां एसि पिशाचाश्चो – दतिष्ठत्न् । तस्मात्ते पराभवत्न् ।
विपुड्भ्यो हि ते समभवत्र् ॥ तदेषाऽभ्यनूका ॥ 96 (10)
T.A.1.23.8
आपो ह यद् बृहतीर् गर्भमायन् । दक्षं दधाना जनयन्तीः स्वयम्भुं ।
तत इमेऽद्ध्य-सृज्यन्त सर्गाः। अद्भ्यो वा इद्र समभूत्।
तस्मादिद्धं सर्वं ब्रह्मं स्वयंभ्विति ॥
तस्मादिद्धं सर्व् शिथिल-मिवा धुव-मिवाभवत् ॥
प्रजापतिर् वाव तत् । आत्मनाऽऽत्मानं विधाय ।
तदेवानु प्राविशत् ॥ तदेषाऽभ्यनूका ( ) ॥ 97 (10)
```

```
T.A.1.23.9
विधाय लोकान्. विधाय भूतानि । विधाय सर्वाः प्रदिशो दिशश्च ।
प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य । आत्मनाऽऽत्मा-नमभि-सम्ँविवेशेति ॥
सर्वमेवेदमाप्त्वा । सर्व-मवरुद्ध्यं । तदेवानु प्रविशति ।
य एवं वैद ॥ 98 (8) (आसी - दितष्ठन् - नभू - देपो - वायो इति -
सेयं दिग - भ्यनूका - ऽभ्यनूका -+ऽष्टौ च) (A23)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 23 ॥
        <u>अनुवाकं-24</u>
1.1.24
चतुंष्टय्य आपों गृह्णाति । चत्वारि वा अपा 🗸 रूपाणि । मेघो विद्युत् ।
स्तनयिनुर्-वृष्टिः । तान्येवा वरुन्धे ॥ आतपति वर्ष्या गृह्णाति ।
ताः पुरस्ता-दुपदधाति । एता वै ब्रह्मवर्चस्या आपः ।
मुखत एव ब्रह्मवर्चस-मवरुन्धे।
तस्मान्-मुखतो ब्रह्मवर्चसितरः ॥ 99 (10)
T.A.1.24.2
कूप्या गृह्णाति । ता दक्षिणत उपदधाति । एता वै तेजस्विनीरापः ।
तेज एवास्य दक्षिणतो दधाति । तस्माद् दक्षिणोद्धं उस्तेजस्वितरः ॥
स्थावरा गृह्णाति । ताः पश्चादुपदधाति ।
```

```
प्रतिष्ठिता वै स्थावराः ।
पश्चादेव प्रतितिष्ठति ॥ वहन्तीर् गृह्णाति । 100 (10)
T.A.1.24.3
ता उत्तरत उपद्धाति ।
अोजसा वा एता वहन्तीरिवोद्-गतीरिव आकूजतीरिव धावन्तीः ।
ओज एवास्योत्तरतो दधाति ।
तस्मादुत्तरोऽद्धं ओजस्वितरः ॥ संभार्या गृह्णाति ।
ता मद्ध्य उपद्याति । इयं वै संभार्याः ।
अस्यामेव प्रतितिष्ठति ॥
पल्वल्या गृह्णाति । ता उपरिष्टा-दुपादधाति । 101 (10)
T.A.1.24.4
असौ वै पल्वल्याः । अमुष्यामेव प्रतितिष्ठति ॥ दिक्षूपदधाति ।
दिक्षु वा आपः । अत्रं वा आपः । अद्भ्यो वा अत्रञ्जायते ।
यदेवाद्भ्यो-ऽन्नं जायते । तदवरुन्धे ॥
तं वा एतमरुणाः केतवो वातरशना ऋषयो-ऽचिन्वन्न् ।
तस्मा-दारुण केतुकः ()॥ 102a
```

```
तदेषाऽभ्यनूका ॥ केतवो अरुणासश्च । ऋषयो वातरशनाः ।
प्रतिष्ठा 🗸 रातधा हि । समाहितासो सहस्रधायसमिति ॥
रातशंश्चैव उसहस्रशश्च प्रतितिष्ठति । य एतमग्निञ्चिनुते ।
य उचैनमेवं वैद ॥ 102b (18)
(ब्रह्मवर्चिसितरो – वहन्तीर् गृह्णाति – ता उपरिष्टादुपादधा – त्यारुणके
तुकोऽष्टौ चं) (A24)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 24 ॥
       <u>अनुवाकं –25</u>
1.1.25
T.A.1.25.1
जानुद्द्या-मुत्तरवेदीङ्खात्वा । अपां पूरयति । अपार् सर्वत्वाय ।
पुष्करपर्ण ए रुक्मं पुरुष-मित्युपदधाति । तपो वै पुष्करपर्णं ।
सत्य ए रुक्मः । अमृतं पुरुषः । एतावद्वा वास्ति । यावदेतत् ।
यावदेवास्ति । 103 (10)
T.A.1.25.2
तदवरुन्थे ॥ कूर्ममुपदधाति । अपामेव मेधुमवरुन्थे ।
अथो स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ आपमापामपः सर्वाः ।
अस्मादस्मा दितोऽमुतः । अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च ।
```

```
सह सञ्चस्करर्खिया इति । <mark>"वाय्वश्वा रिमपतयः{11}"</mark> ॥
लोकं पृणच्छिद्रं पृण । 104 (10)
T.A.1.25.3
यास्तिस्रः परमजाः ॥
"इन्द्र<mark>घोषा वो वसुभि{12}" "रेवा ह्येवे{13}"</mark> ति ॥
पञ्च चितय उपद्याति । पाङ्क्तोऽग्निः ।
यावानेवाग्निः । तञ्चिनुते ॥ लोकं पृणया द्वितीया-मुपदधाति ।
पञ्चपदा वै विराट् । तस्या वा इयं पादः । अन्तरिक्षं पादः ( ) ।
द्यौः पादः । दिशः पादः । परोरजाः पादः ॥ विराज्येव प्रतितिष्ठति ।
य एतमग्निञ्चिनुते । य उचैनमेवं वैदं ॥ 105 (16)
(अस्ति – पृणा – न्तरिक्षम् पादः षट्च) (A25)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 25 ॥
1.1.26 <u>अनुवाकं – 26</u>
T.A.1.26.1
अग्निं प्रणीयोप-समाधाय । तमभित एता अभीष्टका उपद्याति ।
अग्निहोत्रे दर्.शपूर्ण-मासयोः । पशुबन्धे चातुर्मास्येषु ।
अथों आहुः । सर्वेषु यज्ञक्रतुष्विति ॥
```

```
अथ हस्मा हारुणः स्वायम्भूवः।
सावित्रः सर्वोऽग्नि-रित्यननुषङ्गं मन्यामहे ।
नाना वा एतेषां वीर्याणि ॥ कमग्निञ्चनुते । 106 (10)
T.A.1.26.2
सित्रय मग्निञ्चिन्वानः । कमग्निञ्चिनुते । सावित्र मग्निञ्चिन्वानः ।
कमग्निञ्चिनुते । नाचिकेत मग्निञ्चन्वानः । कमग्निञ्चनुते ।
चातुर्. होत्रिय-मग्निञ्चिन्वानः । कमग्निञ्चनुते ।
वैश्वसृज मग्निञ्चन्वानः । कमग्निञ्चनुते । 107 (10)
T.A.1.26.3
उपानुवाक्य-माशु मग्निञ्चिन्वानः । कमग्निञ्चिनुते ।
इममारुण-केतुक मग्निञ्चिन्वान इति ॥ वृषा वा अग्निः ।
वृषाणौ स ७ स्फोलयेत् । हन्येतास्य यज्ञः । तस्मान्नानुषज्यः ॥
सोत्तरवेदिषु क्रतुषु चिन्वीत । उत्तरवेद्या । हाग्निश्चीयते ॥
प्रजाकामश्चिन्वीत । 108 (10)
T.A.1.26.4
प्राजापत्यो वा एषोऽग्निः । प्राजापत्याः प्रजाः । प्रजावान् भवति ।
य एवं वैद ॥ पशुकामश्चिन्वीत । संज्ञानं वा एतत् पशूनां । यदापः ।
पशूनामेव संज्ञाने ऽग्निञ्चिनुते । पशुमान् भवति । य एवं वैद ॥ 109 (10)
```

```
T.A.1.26.5
वृष्टिकामश्चिन्वीत । आपो वै वृष्टिः । पर्जन्यो वर्.षुको भवति ।
य एवं वैद ॥ आमयावी चिन्वीत । आपो वै भेषजं ।
भेषज-मेवास्मै करोति । सर्वमायुरेति ॥
अभिचर७ं श्चिन्वीत । वज्रो वा आपः । 110 (10)
<u>T.A.1.26.6</u>
वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प्रहरित । स्तृणुत एनं ॥ तेजस्कामो यशस्कामः ।
त्रह्मवर्चसकामः स्वर्गकामश्चिन्वीत । एता वद्वा वास्ति । यावदेतत् ।
यावदेवास्ति । तदवरुन्धे ॥ तस्यै तद्व्रतं ।
वर्.षति न धावेत् । 111 (10)
T.A.1.26.7
अमृतं वा आपः । अमृतस्या-नन्तरित्यै ॥ नाफ्सु-मूत्रपुरीषङ्कर्यात् ।
न निष्ठीवेत् । न विवसनः स्नायात् । गुह्यो वा एषीऽग्निः ।
एतस्याग्ने रनति दाहाय ॥ न पुष्करपर्णानि हिरण्यं वाऽधितिष्ठेत् ।
एतस्याग्ने-रनभ्यारोहाय ॥ न कूर्मस्याञ्नीयात् ()।
नोदकस्या-घातुकान्येन-मोदकानि भवन्ति । अघातुका आपः ।
य एतमग्निञ्चिनुते । य उचैनमेवं वैदं ॥ 112 (14) (चिनुते - चिनुते -
प्रजाकामश्चिन्वीत-य एवं वैदा-पो-धावे-दश्नीयाच्चत्वारि च) (A26)
```

```
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 26 ॥
1.1.27 <u>अनुवाकं – 27</u>
T.A.1.27.1
इमा नुकं भुवना सीषधेम । इन्द्रश्च विश्वेच देवाः ॥
यज्ञञ्च नस्तन्वञ्च प्रजाञ्च । आदित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु ॥
आदित्यैरिन्द्रः सगणो-मरुद्धिः । अस्माकं भूत्वविता तनूनां ॥
आप्लवस्व प्रप्लवस्व । आण्डी भव ज मा मुहुः ।
सुखादीन्दुः खनिधनां । प्रतिमुञ्चस्व स्वां पुरं ॥ 113 (10)
T.A.1.27.2
मरीचयः स्वायंभुवाः । ये शरीराण्यं कल्पयन् । ते ते देहङ्कल्पयन्तु ।
मा च ते ख्या स्म तीरिषत् ॥ उत्तिष्ठत मा स्वप्त ।
अग्नि-मिच्छद्ध्वं भारताः । राज्ञः सोमस्य तृप्तासः ।
सूर्येण सयुजोषसः ॥ <mark>"युवा सुवासाः{14}"</mark> ॥
अष्टाचक्रा नवद्वारा । 114 (10)
T.A.1.27.3
देवानां पूरयोद्ध्या । तस्या 🗸 हिरण्मयः को द्वाः ।
स्वर्गी लोको ज्योतिषा ऽऽवृतः ॥ यो वै तां ब्रह्मणो वेद ।
अमृतेनावृतां पुरीं । तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा च ।
```

```
आयुः कीर्तिं प्रजान्ददुः ॥ विभ्राजमाना ए हरिणीं ।
यशसा संपरीवृतां । पुरं हिरण्मयीं ब्रह्मा । 115 (10)
T.A.1.27.4
विवेशापराजिता ॥ पराङ्गेत्य (पराङेत्य) ज्यामयी ।
पराङ्गेत्य (पराङेत्य) नाशकी ।
इह चामुत्र चान्वेति । विद्वान् देवासुरानुभयान् ॥
। । । । । । । । यत्कुमारी मन्द्रयते । यद्योषिद्य-त्पतिव्रता । अरिष्टं यत्किञ्च क्रियते ।
अग्नि-स्तदनु वेधति ॥ अशृतासः शृतासश्च । 116 (10)
T.A.1.27.5
यज्वानो येऽप्ययज्वनः । स्वर्यन्तो नापेक्षन्ते ।
रिमभिः-समुदीरिताः।
अस्मा-ल्लोकाद-मुष्माच्च । ऋषिभि-रदात्-पृश्निभिः ॥
अपेत वीत वि च सर्पतातः । येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः ।
अहोभि-रद्भि-रक्तुभि-र्व्यक्तं । 117 (10)
T.A.1.27.6
यमो ददात्व-वसानमस्मै ॥ नृ मुणन्तु नृ पात्वर्यः ।
अकृष्टा ये च कृष्टजाः । कुमारीषु कनीनीषु ।
```

```
जारिणीषु च ये हिताः ॥ रेतः पीता आण्डंपीताः ।
अङ्गारेषु च ये हुताः । उभयान् पुत्र पौत्रकान् ।
युवेऽहं ँयमराजगान् ॥ <mark>" शतमिन्नु शरदः{15}"</mark> ( ) ॥
अदो यद्ब्रह्म विलबं । पितृणाञ्च यमस्य च ।
वरुण-स्याश्विनो-रग्नेः । मरुताञ्च विहायसां ॥
कामप्रयवणं मे अस्तु । स होवास्मि सनातनः ।
इति नाको ब्रह्मिश्रवी रायो धनं ।
पुत्रानापो देवीरिहाहिता ॥ 118 (18)
(पुरं – नवद्वारा – ब्रह्मा – च – व्यक्तं ् – शरदोऽष्टौ च (A27)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 27 ॥
1.1.28 <u>अनुवाकं – 28</u>
T.A.1.28.1
विशीर्षाः गृद्धं–शीर्षाञ्च । अपेतो निर्ऋति ए हथः ।
परिबाध ॥ श्वेतकुक्षं । निजङ्घ 🗸 शबलोदरं ॥ स तान्. वाच्यायया सह ।
अग्ने नाशय सन्दृशः । ईर्ष्यासूये बुभुक्षां । मन्युं कृत्यां च दीधिरे ।
रथेन कि ्शुकावता । अग्ने नाशय सन्दृशः ॥ 119 (10)
(विशीर्षी दश) (A28)
```

```
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 28 ॥
1.1.29 <u>अनुवाकं – 29</u>
T.A.1.29.1
पर्जन्याय प्रगायत । दिवस्पुत्राय मीढुषे । स नो यवसमिच्छतु ॥
इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे । हृदो अस्तवन्तरन्त-द्युयोत ।
मयोभूर्वातो विश्वकृष्टयः सन्त्वस्मे । सुपिप्पला ओषधीर् देवगोपाः ॥
यो गर्भ-मोषधीनां । गवाङ्कृणोत्यर्वतां । पर्जन्यः पुरुषीणां ॥ 120 (10)
(पर्जन्याय दश) (A29)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 29 ॥
             अनुवाकं – 30
1.1.30
T.A.1.30.1
पुनर्मामैत्विन्द्रियं । पुनरायुः पुनर्भगः । पुनर् ब्राह्मण-मैतु मा ।
पुनर् द्रविण मैतु मा ॥ यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान् ।
यदोषधीरप्यसरद्-यदापः । इदन्तत् पुनराददे ।
दीर्घायुत्वाय वर्चसे ॥ यन्मे रेतः प्रसिच्यते ।
यन्म आजायते पुनः()। तेन माममृतं कुरु।
तेन सुप्रजसङ्कर ॥ 121 (12) (पुनर्हें च) (A30)
```

```
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 30 ॥
             <u>अनुवाकं – 31</u>
1.1.31
T.A.1.31.1
अद्भय-स्तिरोधा जायत । तव वैश्रवणः सदा । तिरो धेहि सपलान्नः ।
ये अपोऽञ्चनित केचन ॥ त्वाष्ट्रीं मायां वैश्रवणः ।
रथण् सहस्र वन्धुरं । पुरुश्चक्रण् सहस्राश्चं ।
अस्था यायाहि नो बलिं॥ यस्मै भूतानि बलिमावहन्ति ।
धनङ्गावो हस्ति हिरण्यमश्चान् । 122 (10)
T.A.1.31.2
असाम सुमतौ यज्ञियस्य । श्रियं बिभ्रतो उन्नमुखीं विराजं ॥
सुदर्.ञ्ने च क्रौञ्चे च । मैनागे च महागिरौ ।
शतद्वाट्टारंगमन्ता (सतद्वाट्टारंगमन्ता)।
- । । - । ॥ ।
स्र्हार्यं नगरं तव ॥ इति मन्त्राः । कल्पोऽत ऊद्ध्वं ॥
यदि बलिण् हरेत् ।
हिरण्यनाभये वितुदये कौबेरायायं बलिः । 123 (10)
T.A.1.31.3
सर्वभूताधिपतये नम इति । अथ बलि 🗸 हत्वोपतिष्ठेत ॥
क्षत्रं क्षत्रं वैश्रवणः । ब्राह्मणा वय 🗸 स्मः ।
```

```
नमस्ते अस्तु मा मा हि एसीः । अस्मात् प्रविश्यान्नमद्धीति ॥
अथ तमग्नि-मादधीत । यस्मिन्ने तत्कर्म प्रयुञ्जीत ॥
तिरोधा भूः । तिरोधा भुवः । 124 (10)
T.A.1.31.4
तिरोधाः स्वः । तिरोधा भूर्भुवस्स्वः ।
सर्वेषां लोकाना-माधिपत्ये सीदेति ॥ अथ तमग्नि-मिन्धीत ।
यस्मिन्ने तत्कर्म प्रयुञ्जीत ॥ तिरोधा भूः स्वाहा ।
तिरोधा भुवः स्वाहा । तिरोधाः स्वः स्वाहा ।
तिरोधा भूर्भुवस्स्वस्त्वाहा ॥
यस्मिन्नस्य काले सर्वा आहुतीर्. हुता भवेयुः। 125 (10)
T.A.1.31.5
अपि ब्राह्मणमुखीनाः । तस्मिन्नहः काले प्रयुञ्जीत ।
परः सुप्तजनाद्वेपि ॥ मा स्म प्रमाद्यन्त माद्ध्यापयेत् ।
सर्वार्थाः सिद्ध्यन्ते । य एवं वैद । क्षुद्ध्य-न्निदमजानतां ।
सर्वार्था न सिद्ध्यन्ते ॥ यस्ते विघातुको भ्राता ।
ममान्तर्. हृंदये श्रितः । 126 (10)
```

```
T.A.1.31.6
तस्मा इममग्र पिण्डञ्जुहोमि । स मेऽर्थान् मा विवधीत् । मयि स्वाहा ॥
राजाधिराजाय प्रसहा साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
- - - । ॥ - ॥ ।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः । केतवो अरुणासश्च ( ) ।
ऋषयो वातरशनाः । प्रतिष्ठा ्र शृतधा हि ।
समाहितासो सहस्रधायसं । शिवा नः शन्तमा भवन्तु ।
विव्या आप ओषधयः । सुमृडीका सरस्वति ।
मा ते व्योम सन्द्रशि ॥ 127 (17)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सूर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 31 ॥
1.1.32 <u>अनुवाकं – 32</u>
T.A.1.32.1
सम्वथ्सरमेतद् व्रतञ्चरेत् । द्वौ वा मासौ ॥ नियमः समासेन ॥
तस्मिन् नियम विशेषाः । त्रिषवण-मुदकोपस्पर्.शी ।
चतुर्थ कालपानभक्तः स्यात् । अहरहर्वा भैक्षंमञ्नीयात् ।
औदुम्बरीभिः समिद्धि-रग्निं परिचरेत् ।
```

```
पुनर्मा मैत्विन्द्रिय-मित्येतेना-उनुवाकेन ।
उद्धत परिप्रताभिरद्धिः कार्यं कुर्वीत । 128 (10)
<u>T.A.1.32.2</u>
असञ्चयवान् । अग्नये वायवे सूर्याय । ब्रह्मणे प्रजापतये ।
चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यः । ऋतुभ्यः सम्वथ्सराय ।
वरुणा-यारुणायेति व्रतहोमाः । प्रवर्ग्यवदादेशः ।
अरुणाः काण्ड ऋषयः ॥ अरण्येऽधीयीरन्न् ।
भद्रंकर्णेभिरिति हे जिपत्वा । 129 (10)
T.A.1.32.3
महानाम्नीभि-रुदक्ण संश्रस्पर्श्य । तमाचार्यो दद्यात् ।
शिवानः शन्तमे-त्योषधीरालभते । सुमृडीकेति भूमिं । एवमपवर्गे ।
।
धेनुर् दक्षिणा । कर्सम्वासश्च क्षौमं । अन्यद्वा शुक्लं ।
यथा शक्ति वा । एव७ स्वाद्ध्याय धर्मेण ( ) । अरण्येऽधीयीत ।
तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति ॥ 130 (12)
(कुर्वीत – जिपत्वा – स्वादृध्यायधर्मेण हे च) (A32)
श्री छाया-सुवर्चलाम्बा समेत श्री सुर्यनारायण स्वामिने नमः।
🕉 नमो नारायणाय ॥ 32 ॥
```

तैत्तिरीय आरण्यके प्रथमः प्रपाठकः - अरुणप्रइनः - (TA 1)

Prapaataka Korvai with starting Padams of 1 to 32 Anuvaakams :
(भद्र७ – स्मृतिः – साकंजाना – मक्ष्य – तिताम्रा – ण्यत्युद्र्ध्विक्ष
– आरोगः – क्वेद – मग्निश्च – सहस्रवृत् – पवित्रवन्त –

आतनुष्वा –ष्ट्योनीं – योऽसा – वथादित्य – स्यारोग–स्याथ वायो–

रथाग्नेर् – दक्षिणपूर्वस्या – मिन्द्रघोषा व–आपमापां–योऽपा –

मापो वै – चतुष्टय्यो – जानुद्रघ्नी – मग्निं प्रणीये – मा नु कं –

ा । । । । विशीष्णीं – पर्जन्याय – पुन – रद्भ्यः –सम्वथ्सरं द्वात्रिण्ञात्)

 Korvai with starting Padams of 1, 11, 21 Series of Dasinis :

 (भद्रं – ज्योतिषा – तस्मिन् राजानं – क्रश्यपाथ्–सहस्रवृदियं–

 - ।

 नपु ्सक – मष्टयोनी – मवपतन्ताना – मायतनवान् भवति –

 - ।

 स्तो बन्धुं – ता उत्तरतो – वज्रमेव – पुनर्मामैतु

 - ।

 नि ्यु त्रा द्वत्तरशतम्)

First and Last Padam in TA, 1st Prapaatakam :(भद्रं – तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति)

॥ हरिः ओम् ॥

॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यके प्रथमः प्रपाठकः (अरुणप्रशः)

समाप्तः ॥

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं

6 त्रिणाचिकेतं

T.B.3.11.7.1 अयं वाव यः पवते । सोऽग्नि र्नाचिकेतः । स यत् प्राङ् पवते । तदस्य शिरः । अथ यद् दक्षिणा । स दक्षिणः पक्षः । अथ यत् प्रत्यक् । तत् पुच्छं । य दुदङ्ङ् । स उत्तरः पक्षः । **37(10)** T.B.3.11.7.2 ——— । । । । । । । अथ यथ् सम्वाति । तदस्य समञ्चनं च प्रसारणं च । अथों संपदेवास्य सा ॥ सण् ह वा अस्मै स कामः पद्यते । यत् कामो यजते । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । य उ चैन-मेवं वैद ॥ यो ह वा अग्ने निचिकेतस्यायतनं प्रतिष्ठां वेद । आयतनवान् भवति । गच्छति प्रतिष्ठां । 38 (10) T.B.3.11.7.3 हिरण्यं वा अग्ने र्नाचिकेतस्यायतनं प्रतिष्ठा । य एवं वैद । आयतनवान् भवति । गच्छति प्रतिष्ठां ॥ यो ह वा अग्ने निकितस्य शरीरं वैद । स शरीर एव स्वर्गं लोकमेति।

```
हिरण्यं वा अग्ने नचिकेतस्य शरीरं।
य एवं वैद । स शरीर एव स्वर्गं लोकमेति ॥
अथो यथा रुक्म उत्-तप्तो भाय्यात् । 39 (10)
T.B.3.11.7.4
। । । । । । । । ।
एवमेव स तेजसा यशसा। अस्मि⊌श्च लोके –ऽमुष्मि⊌श्च भाति॥
उरवों ह वै नामैते लोकाः । ये-ऽवरेणादित्यं ।
अर्थ हैते वरीया एसो लोकाः । ये परेणादित्यं ।
अन्तवन्तर्ं ह वा एष क्षय्यं ँलोकं जयति । यो-ऽवरेणादित्यं ।
। । । । ।
अथ हैषो-ऽनन्त-मपार-मक्षय्यं ँलोकं जयति ।
यः परेणादित्यं ( ) ॥ ४० (१०)
T.B.3.11.7.5
ग । । । । । । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । य उ चैन-मेवं वैद ॥
अथो यथा रथे तिष्ठन् पक्षसी पर्या-वर्त्तमाने प्रत्यपेक्षते ।
एव-महोरात्रे प्रत्यपेक्षते ।
नास्या-होरात्रे लोकमाप्नुतः । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ 41 (8)
```

```
(उत्तरः पक्षो – गच्छति प्रतिष्ठां – भाय्याद् – यः परेणादित्य –
+मष्टौ चं) (८७७)
T.B.3.11.8.1
उञ्जन्. ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ ।
ा । । । । । । । । । तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस । त्रण् ह कुमारण् सन्तं ।
दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धा ऽऽविवेश । स होवाच ।
तत कस्मै मां दास्यसीति । द्वितीयं तृतीयं ॥ तं ् ह परीत उवाच ।
मृत्यवे त्वा ददामीति ॥ तर् ह स्मोत्थितं वागभिवदति । 42 (10)
T.B.3.11.8.2
गौतम कुमारमिति । स होवाच । परेहि मृत्यो गृहान् ।
मृत्यवे वै त्वाऽदा-मिति ॥ तं वै प्रवसन्तं गन्तासीति होवाच ।
तस्य स्म तिस्रो रात्री-रनाश्वान् गृहे वसतात् । स यदि त्वा पृच्छेत् ।
कुमार कति रात्री-रवाथ्सी-रिति । तिस्र इति प्रति ब्रूतात् ।
किं प्रथमां रात्रि–माइना इति । 43 (10)
T.B.3.11.8.3
प्रजां त इति । किं द्वितीया-मिति । पशू ७स्त इति ।
किं तृतीया–मिति । साधुकृत्यां त इति ॥ तं वै प्रवसन्तं जगाम ।
```

```
तस्य ह तिस्रो रात्री-रनाश्वान् गृह उवास । तमागत्य पप्रच्छ ।
कुमार कति रात्री-रवाथ्सी-रिति । तिस्र इति प्रत्युवाच । 44 (10)
T.B.3.11.8.4
किं प्रथमा ए रात्रि – माञ्चा इति । प्रजां त इति ।
किं द्वितीया-मितिं। पशू ७ स्त इतिं। किं तृतीया-मितिं।
साधुकृत्यां त इति ॥ नमस्ते अस्तु भगव इति होवाच ।
वरं वृणीष्वेति ॥ पितरमेव जीवन्नयानीति ॥
द्वितीयं ँवृणीष्वेति । 45 (10)
T.B.3.11.8.5
इष्टापूर्तयो में ऽक्षितिं ब्रूहीति होवाच।
तस्मै हैतमग्निं नाचिकेत-मुवाच।
ततो वै तस्ये-ष्टापूर्ते ना क्षीयेते ॥
नास्येष्टा-पूर्ते क्षीयेते । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ तृतीयं वृणीष्वेति ।
पुन मृत्यो में ऽपजितिं ब्रहीति होवाच।
तस्मै हैतमग्निं नाचिकेत-मुवाच।
ततो वै सोऽप पुन मृत्यु-मजयत् । 46 (10)
```

```
T.B.3.11.8.6
ज्या । । । । । अप पुन मृत्युं जयति । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ॥
य उ चैन-मेवं वैद ॥ प्रजापति वै प्रजाकाम-स्तपो-ऽतप्यत ।
। । । । । । । । । । स्म हिरण्य-मुदास्यत् । त-दग्नौ प्रास्यत् । त-दस्मै नाच्छदयत् ।
तद् द्वितीयं प्रास्यत् । त-दस्मै नै वाच्छदयत् ।
तत् तृतीयं प्रास्यत् । 47 (10)
T.B.3.11.8.7
त-दस्मै नै वाच्छदयत् । त-दात्म-न्नेव हृदय्येऽग्नौ वैश्वानरे प्रास्यत् ।
त–दस्मा अच्छदयत् । तस्माब्धिरण्यं कनिष्ठं धनानां ।
भुञ्जत् प्रियतमं । हृदयज्ं हि । स वै तमेव नाविन्दत् ।
यस्मै तां दक्षिणा-मनेष्यत् ।
ता <br/>स्वायैव हस्ताय दक्षिणायानयत् ।
तां प्रत्यगृह्णात् । 48 (10)
T.B.3.11.8.8
दक्षाय त्वा दक्षिणां प्रतिगृह्णामीति । सो ऽदक्षत दक्षिणां प्रतिगृह्य ।
दक्षते ह वै दक्षिणां प्रतिगृह्य । य एवं वैद ॥
एतद्धं स्म वै तद् विद्वा एसो वाजश्रवसा गोतमाः।
अप्यनूदेश्यां दक्षिणां प्रतिगृह्णन्ति ।
```

```
उभयेन वयं दक्षिष्यामह एव दक्षिणां प्रतिगृह्येति ।
ते ऽदक्षन्त दक्षिणां प्रतिगृह्य ।
दक्षते ह वै दक्षिणां प्रतिगृह्य । य एवं वैद ()।
प्र हान्यं ँव्लीनाति ॥ 49 (11)
(वद – त्याञ्ना इत् – युवाच – द्वितीयं वृणीष्वे – त्यजयत् –
तृतीयं प्रास्य – दगृह्णाद् – य एवं वैदैकं च) (A8)
T.B.3.11.9.1
त्रं हैत-मेके पशुबन्ध एवोत्तरवेद्यां चिन्वते ।
उत्तरवेदिसम्मित एषोऽग्निरिति वदन्तः ।
तन्न तथा कुर्यात् । एत-मग्निं कामेन व्यर्द्धयेत् ।
स एनं कामेन व्यृद्धः । कामेन व्यर्द्धयेत् ।
सौम्ये वावै नमध्वरे चिन्वीत । यत्र वा भूयिष्ठा आहुतयो हूयेरत्र् ।
एत-मग्निं कामेन समर्ख्यति । स एनं कामेन समृद्धः । 50 (10)
T.B.3.11.9.2
कामेन समर्द्धयति ॥ अथ हैनं पुरर्.षयः ।
उत्तरवेद्या-मेव सत्रिय-मचिन्वत । ततो वै तेऽविन्दन्त प्रजां ।
अभि स्वर्गं ँलोक-मजयन्न् । विन्दतं एव प्रजां ।
```

```
अभि स्वर्गं लोकं जयति । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ अथ हैनं वायुर्. ऋद्धिकामः । 51 (10)
T.B.3.11.9.3
यथान्युप्त-मेवोपदधे । ततो वै स एता-मृद्धि-माद्ध्नीत् ।
यामिदं वायुर्. ऋद्धः । एता-मृद्धि-मृद्ध्नोति ।
यामिदं वायुर्. ऋद्धः । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ अथ हैनं गोबलो वार्ष्णः पशुकामः ।
। । । ॥
पांक्तमेव चिक्ये । पञ्च पुरस्तात् । 52 (10)
T.B.3.11.9.4
पञ्च दक्षिणतः । पञ्च पश्चात् । पञ्चोत्तरतः । एकां मद्ध्ये ।
ततो वै स सहस्रं पशून् प्राप्नोत् । प्र सहस्रं पशू-नाप्नोति ।
योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । य उ चैन-मेवं वैद ॥
अथ हैनं प्रजापति ज्यैष्ठ्यकामो यशस्कामः प्रजननकामः।
त्रिवृतमेव चिक्ये । 53 (10)
T.B.3.11.9.5
सप्त पुरस्तात् । तिस्रो दक्षिणतः । सप्त पश्चात् । तिस्र उत्तरतः ।
एकां मद्ध्ये । ततो वै स प्र यशो ज्यैष्ठ्य-माप्नोत् ।
```

```
एतां प्रजातिं प्राजायत । यामिदं प्रजाः प्रजायन्ते ।
त्रिवृद् वै ज्यैष्ठ्यं । माता पिता पुत्रः । 54 (10)
T.B.3.11.9.6
त्रिवृत् प्रजननं । उपस्थो योनि र्मद्ध्यमा ।
प्रयशो ज्यैष्ठ्य-माप्नोति । एतां प्रजातिं प्रजायते ।
यामिदं प्रजाः प्रजायन्ते । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैनमेवं वैद ॥ अथ हैन-मिन्द्रो ज्यैष्ठ्यकामः ।
ऊद्र्ध्वा एवोपद्धे । ततो वै स ज्यैष्ठ्यं-मगच्छत् । 55 (10)
T.B.3.11.9.7
ज्यैष्ठ्यं गच्छति । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ अथ हैन-मसावादित्यः स्वर्गकामः ।
प्राचीरेवोपदधे । ततो वै सोऽभि स्वर्गं लोक-मजयत् ।
अभि स्वर्गं ँलोकं जयति । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ स यदीच्छेत् । 56 (10)
T.B.3.11.9.8
तेजस्वी यशस्वी ब्रह्मवर्चसी स्यामिति । प्राङा होतुर्द्धिष्णया-दुथ्सर्पेत् ।
येयं प्रागाद् यशंस्वती । सा मा प्रोणींतु ।
तेजसा यशसा ब्रह्मवर्चसेनेति।
```

तेजस्व्येव यशस्वी ब्रह्मवर्चसी भवति ॥ अथ यदीच्छेत् । भूयिष्ठं मे श्रद्दधीरत्र् । भूयिष्ठा दक्षिणा नयेयुरिति । दक्षिणासु नीयमानासु प्राच्येहि प्राच्येहीति प्राची जुषाणा वेत्वाज्यस्य स्वाहेति सुवेणो-पहत्या हवनीये जुहुयात् । 57 (10) T.B.3.11.9.9 भूयिष्ठ-मेवास्मै श्रद्दंधते । भूयिष्ठा दक्षिणा नयन्ति ॥ पुरीष-मुपधाय । चिति-क्लृप्तिभि-रभिमृश्य । अग्निं प्रणीयोपसमाधाय । चतस्र एता आहुती र्जुहोति । त्वमग्ने रुद्र इति शतरुद्रीयस्य रूपं। अग्ना-विष्णू इति वसोद्धीरायाः । अन्नपत इत्यन्न होमः । सप्त तें अग्ने समिधः सप्त जिह्वा इति विश्वप्रीः () ॥ 58 (10) । [समृद्ध – ऋद्धिकामः – पुरस्ताच् – चिक्ये – पुत्रो – ऽगच्छ – दिच्छे – जुंहयाद – विश्वप्रिः ()] (A9) Special Korvai

Special Korvai (पुरर्.षयो वायुर् गोबलः सहस्रं प्रजापति स्त्रिवृदिन्द्रो । ऽसावादित्यः स यदीच्छेत्)

```
T.B.3.11.10.1
यां प्रथमा-मिष्टका-मुपद्धाति । इमं तया लोक-मभि जयति ।
अथो या अस्मिन् ँलोके देवताः ।
तासा एं सायुं ज्य एं सलोकतां – माप्नोति । यां द्वितीयां – मुपदधाति ।
अन्तरिक्षलोकं तया-ऽभि जयति । अथो या अन्तरिक्ष लोके देवताः ।
तासा ए सायुज्य ए सलोकता – माप्नोति ।
यां तृतीया-मुपदधाति ।
अमुं तया लोक-मभिजयति । 59 (10)
T.B.3.11.10.2
अथो या अमुष्मिन् लोके देवताः ।
तासा एं सायुज्य एं सलोकता – माप्नोति ।
अथो या अमूरितरा अष्टादश ।
य एवामी उरवश्च वरीया एसश्च लोकाः।
तानेव ताभि-रभिजयति ॥
कामचारो ह वा अस्योरुषु च वरीयस्सु च लोकेषु भवति।
योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । य उ चैन-मेवं वैद ॥
सम्वथ्सरो वा अग्नि नीचिकेतः । तस्य वसन्तः शिरः । 60 (10)
```

```
T.B.3.11.10.3
ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः । वर्.षा उत्तरः । शरत् पुच्छं ।
मासाः कर्मकाराः । अहोरात्रे शतरुद्रीयं । पर्जन्यो वसोद्र्धारा ।
यथा वै पर्जन्यः सुवृष्टं वृष्ट्वा ।
प्रजाभ्यः सर्वान् कामान्थ् संपूरयति ।
एव-मेव स तस्य सर्वान् कामान्थ् संपूरयति ।
ा ।
योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । 61 (10)
T.B.3.11.10.4
य उ चैन-मेवं वैंद ॥ सम्वथ्सरो वा अग्नि नीचिकेतः।
तस्य वसन्तः शिरः । ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः ।
वर्.षाः पुच्छं । शरदुत्तरः पक्षः । हेमन्तो मद्ध्यं ।
पूर्वपक्षाश्चितयः । अपरपक्षाः पुरीषं । अहोरात्राणीष्टकाः ( ) ।
एष वाव सोऽग्नि-रंग्निमयः पुनर्णवः ।
अग्निमयो ह वै पुनर्णवो भूत्वा । स्वर्गं लोक-मेति ।
आदित्यस्य सायुज्यं । योऽग्निं नाचिकेतं चिनुते ।
य उ चैन-मेवं वैद ॥ 62 (16) (अमुं तया लोकमभिजयति – शिर –
श्चिनुत – इष्टकाः षट्च) (A10)ओं ञान्तिः ञान्तिः शान्तिः॥
```